शिक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF
EDUCATION

सत्यमेव जयते

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान
NATIONAL INSTITUTE OF EDUCATIONAL PLANNING AND ADMINISTRATION

NATIONAL CENTRE FOR SCHOOL LEADERSHIP
NCSL
Every Child Learns
Every School Excels

निष्ठा 3.0

विद्यालय नेतृत्व: बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान

विद्यालय प्रमुखों एवं शिक्षकों के लिए स्व-निर्देशात्मक कोर्स

सत्यमेव जयते

शिक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF
EDUCATION

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान
NATIONAL INSTITUTE OF EDUCATIONAL PLANNING AND ADMINISTRATION

NATIONAL CENTRE FOR SCHOOL LEADERSHIP
NCSL
Every Child Learns
Every School Excels

निष्ठा 3.0

विद्यालय नेतृत्व: बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान

विद्यालय प्रमुखों एवं शिक्षकों के लिए
स्व-निर्देशात्मक कोर्स

प्रो. सुनीता चुघ
डॉ. चारु स्मिता मलिक
डॉ. पूजा सिंघल

प्रस्तावना

विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल 'निष्ठा' की संकल्पना भारत में सरकारी शिक्षा प्रणाली के विद्यालय प्रमुखों एवं शिक्षकों के लिए एक समग्र क्षमता विकास कार्यक्रम के रूप में की गई है ताकि वे अपने विद्यालयों को रूपांतरित कर सकें और विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण सुधार हेतु परिवर्तनकारी एजेंट के रूप में उभरें। निष्ठा कार्यक्रम सभी हितधारकों- विद्यार्थियों, शिक्षकों, विद्यालय प्रमुखों, अभिभावकों, समुदाय एवं व्यवस्था स्तरीय कार्यकर्ताओं के सक्रिय समर्थन की भी परिकल्पना करता है ताकि विद्यालय प्रमुख अपने विद्यालय में सकारात्मक बदलावों को सहयोगात्मक रूप से सोचने, रूपरेखा बनाने एवं उसके क्रियान्वयन के साथ पारस्परिक अपेक्षाओं एवं चुनौतियों को समझने में सक्षम हों। निष्ठा कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थी अधिगम एवं अधिगम प्रतिफलों में सुधार लाना है।

ऑनलाइन माध्यम में, निष्ठा को तीन चरणों में संकल्पित किया गया है- प्राथमिक विद्यालयों के विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों के लिए निष्ठा 1.0, माध्यमिक विद्यालयों के विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों के लिए निष्ठा 2.0 एवं बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लिए निष्ठा 3.0।

विद्यालय नेतृत्व: बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान पर कोर्स राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र, नीपा द्वारा विकसित किया गया है। इस कोर्स का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक एवं संयुक्त विद्यालयों के विद्यालय प्रमुखों एवं शिक्षकों को विद्यालय नेतृत्वकर्ताओं एवं शिक्षक नेतृत्वकर्ताओं के रूप में सक्षम बनाना है जो बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के सुदृढ़ीकरण हेतु विद्यालय का नेतृत्व कर सकें। यह कोर्स 'दीक्षा पोर्टल' पर अपलोड किए गए निष्ठा 3.0 के अंतर्गत संख्या 10 पर उपलब्ध है।

यह कोर्स विद्यालय प्रमुखों एवं शिक्षकों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के कार्यान्वयन के लिए प्रभावी परिस्थितियों का निर्माण करने हेतु संदर्भ-अनुक्रियाशील, अनुकूल एवं सहयोगी नेतृत्वकर्ताओं के रूप में उनकी नेतृत्व क्षमता का निर्माण करने में मदद करता है। इसके अलावा, यह कोर्स विद्यालय प्रमुखों को शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ताओं के रूप में देखता है जो एक सहयोगात्मक विज़न बनाने और 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के लिए प्रासंगिक विभिन्न शिक्षाशास्त्र से संबंधित ज्ञान और विनमय कौशल के अर्जन एवं अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करते हैं। शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान में व्यक्त विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए माता-पिता, पारिवारिक सदस्यों, समुदायों, व्यवस्था स्तरीय कार्यकर्ताओं सहित हितधारकों के साथ साझेदारी भी करते हैं। शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता शिक्षकों को परामर्श एवं प्रशिक्षण देने, बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु प्रासंगिक आकलन विकसित करने, विद्यालयों में शिक्षार्थियों के लिए एक सीखने की प्रेरक संस्कृति बनाने हेतु आवश्यक ज्ञान, कौशल और अभिवृत्ति रखने वाले होते हैं।

इस कोर्स के हिंदी संस्करण के सृजन में विभिन्न भागीदारों का सहयोग रहा है। हम पल्लवी शर्मा, उपायुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन (के.वी.एस.) का विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापित करते हैं कि उन्होंने केन्द्रीय विद्यालय संगठन के प्राथमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं को बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कोर्स के हिंदी संस्करण के वीडियो प्रस्तुतीकरण में शामिल होने की स्वीकृति प्रदान की। हम वीडियो प्रस्तुतीकरण में सहयोग देने वाली केन्द्रीय विद्यालय संगठन की अध्यापिकाओं ज्योति तिवारी, संगीत अध्यापिका, निधि वर्मा, अध्यापिका एवं अनुराधा शर्मा, अध्यापिका, प्राथमिक विद्यालय के भी आभारी हैं। हम वीडियो प्रस्तुतीकरण में शामिल होने के लिए पूर्णिमा वर्मा, यू.डी.सी. और सतीश कुमार, असिस्टेंट, नीपा एवं मोनिका बजाज, कनिष्ठ सलाहकार और अलका नेगी, डाटा एंट्री ऑपरेटर, राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र,नीपा का धन्यवाद करते हैं।

कोर्स का हिंदी अनुवाद करने के लिए हम अतुल कुमार मिश्रा, सहायक संपादक (हिंदी), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली का आभार व्यक्त करते हैं। कोर्स के हिंदी संपादन कार्य में सहयोग करने के लिए हम रितिका, कनिष्ठ सलाहकार, राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। हम हम डॉ. चारू स्मिता मलिक, सहायक प्रोफेसर, राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र को हिंदी संपादन एवं दस्तावेज संशोधन कार्य में मार्गदर्शन देने तथा दस्तावेज को अंतिम रूप प्रदान करने के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं ।

कोर्स 10 : बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व

- **कोर्स की जानकारी**
  - कोर्स का विवरण
  - मुख्य शब्द
- **कोर्स का सिंहावलोकन**
  - कोर्स निर्देश (Text) (10_1_hin_course_instruction)
  - उद्देश्य (Slide Text) (10_2_hin_objectives)
  - कोर्स की रूपरेखा (Slide Text) (10_3_hin_course_outline)
- **बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) हेतु विद्यालय नेतृत्व पर रूपरेखा का विकास**
  - बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व : परिचय (Video) (10_4_hin_leadership_for_foundational_literacy_and_numeracy_introduction)
  - बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व : परिचय - लिप्यंकन (Text)(10_5_hin_leadership_for_foundational_literacy_and_numeracy_introduction_transcript)
  - बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व पर एक दृष्टिकोण का निर्माण (Text**)** (10_6_hin_developing_perspective_on_leadership_fln)
  - एफ.एल.एन. के संदर्भ में विद्यालय नेतृत्व विकास पर मॉडल (Text) (10_7_hin_ models_leadership_fln)
  - गतिविधि 1 : स्वयं करें (Text) (10_8_hin_activity1_try_yourself)
  - गतिविधि 2 : अपने विचार साझा करें (Text – Blog) (10_9_hin_activity2_reflect)
- **बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व**
  - शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कौन है? (Video) (10_10_hin_who_is_a_pedagogical_leader)
  - शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कौन है? – लिप्यंकन (10_11_hin_who_is_a_pedagogical_leader_transcript)
  - गतिविधि 3 : अन्वेषण (H5P - Image Hotspot) (10_12_hin_activity3_explore)
  - गतिविधि 4 : अपने विचार साझा करें (Text - Blog) (10_13_hin_activity4_share_your_thoughts)
  - शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कैसा हो? (Video) (10_14_hin_how_to_become_a_pedagogical_leader)
  - शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कैसा हो? – लिप्यंकन (Text) (10_15_hin_how_to_become_a_pedagogical_leader_transcript)
- **एफ.एल.एन. के लिए विद्यालय- परिवार- समुदाय के बीच सफल भागीदारी का निर्माण**
  - विद्यालय प्रमुखों द्वारा परिवार और समुदाय को कैसे संलग्न करें (Text) (10_16_hin_how_to_engage_parents_family_and_community_by_school_leaders)
  - गतिविधि 5 : स्वयं करें (Text) (10_17_hin_activity5_try_yourself)
- **विद्यालय में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) की योजना एवं क्रियान्वयन**
  - ब्लॉक एवं विद्यालय स्तर पर बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ. एल. एन.) की अवधारणा (Text) (10_18_hin_conceptualizing_fln_block_school_level)

- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का विद्यालय प्रमुखों द्वारा क्रियान्वयन (Video) (10_19_hin_implementation_of_fln_by_school_heads)
- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का विद्यालय प्रमुखों द्वारा क्रियान्वयन - लिप्यंकन (Text) (10_20_hin_implementation_of_fln_by_school_heads_transcript)
- गतिविधि 6 : अन्वेषण **(**H5P - Image Hotspot) (10_21_hin_activity6_explore)

- **सारांश**
  - सारांश (Mind Map) (10_22_hin_summary)
- **पोर्टफ़ोलियो गतिविधि**
  - असाइनमेंट (Text) (10_23_hin_assignment)
- **अतिरिक्त संसाधन**
  - संदर्भ (Text) (10_24_hin_references)
  - वेब लिंक्स (Text) (10_25_hin_weblinks)
- **आकलन**
  - प्रश्नोत्तरी (10_26_hin_quiz)

उपलब्ध वीडियो संसाधनों की सूची *

क्रम संख्या	शीर्षक
1.	बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व : परिचय (Video) (10_4_hin_leadership_for_foundational_literacy_and_numeracy_introduction)
2.	शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कौन है? (Video) (10_10_hin_who_is_a_pedagogical_leader)
3.	शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कैसा हो? (Video) (10_14_hin_how_to_become_a_pedagogical_leader)
4.	बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का विद्यालय प्रमुखों द्वारा क्रियान्वयन (Video) (10_19_hin_implementation_of_fln_by_school_heads)

*** उपरोक्त उल्लेखित वीडियो दीक्षा पोर्टल तथा राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र से प्राप्त किये जा सकते हैं**

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) हेतु विद्यालय नेतृत्व

कोर्स की जानकारी

कोर्स का विवरण

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) हेतु विद्यालय नेतृत्व विकास का दृष्टिकोण विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों के लिए की गई है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यालय प्रमुखों एवं शिक्षकों को नेतृत्वकर्ता के रूप में विकसित करना है ताकि वे 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के लिए बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान प्राप्त करने हेतु अपने विद्यालय का नेतृत्व कर सकें।

मुख्य शब्द

निष्ठा, बुनियादी शिक्षा एवं संख्या ज्ञान, विद्यालय नेतृत्व, प्राथमिक विद्यालय,शिक्षक नेतृत्व, सामाजिक-भावनात्मक गुण, शिक्षार्थियों की विकास संबंधी आवश्यकताएँ, शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व, विद्यार्थी अधिगम, सीखने की संस्कृति, विद्यालय विकास, विद्यालय समुदाय, अभिभावक, अवधारणाएँ, अनुप्रयोग, एन.सी.एस.एल., नीपा

कोर्स अवलोकन

कोर्स निर्देश (Text) (10_1_hin_course_instruction)

शिक्षार्थी के लिए निर्देश

निपुण भारत कार्यक्रम के निष्ठा 3.0 में आपका स्वागत है। प्रत्येक शिक्षक/विद्यालय प्रमुख से अपेक्षा की जाती है कि वे सम्पूर्ण 12 कोर्स करें।

कोर्स का तरीका

प्रत्येक शिक्षार्थी को शत-प्रतिशत पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए वीडियो, पाठ्य सामग्री और विभिन्न प्रकार की अभ्यास गतिविधियों के रूप में प्रस्तुत सभी पाठ्यक्रम सामग्री से गुज़रना अनिवार्य है। अधिगम विस्तार हेतु इस पाठ्यक्रम सामग्री से परे अतिरिक्त संसाधन प्रदान किए गए हैं।

प्रमाणीकरण

पाठ्यक्रम के अंत में, शिक्षार्थियों से एक वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन प्रश्नोत्तरी लेने की अपेक्षा की जाती है। 3 प्रयासों के भीतर अंतिम मूल्यांकन में 70% हासिल करने वाले शिक्षार्थियों को दीक्षा पोर्टल में भाग लेने हेतु 'सहभागिता प्रमाणपत्र' ऑनलाइन प्राप्त होगा। प्रमाणपत्र को तैयार होने में 0-15 दिन लग सकते हैं। इसे नीचे दिए गए चरणों का पालन करते हुए दीक्षा पोर्टल के प्रोफाइल पेज से डाउनलोड किया जा सकता है :

दीक्षा पोर्टल में सर्टिफिकेट कैसे प्राप्त एवं डाउनलोड करें

चरण 1 : प्रोफाइल पेज पर जाएं, प्रोफाइल पर जाने के लिए, अपनी स्क्रीन के ऊपरी दाएं कोने में अपने नाम के पहले अक्षर के साथ वाले सर्कल आइकन पर क्लिक करें, जैसा कि लाल बॉक्स में हाइलाइट किया गया है

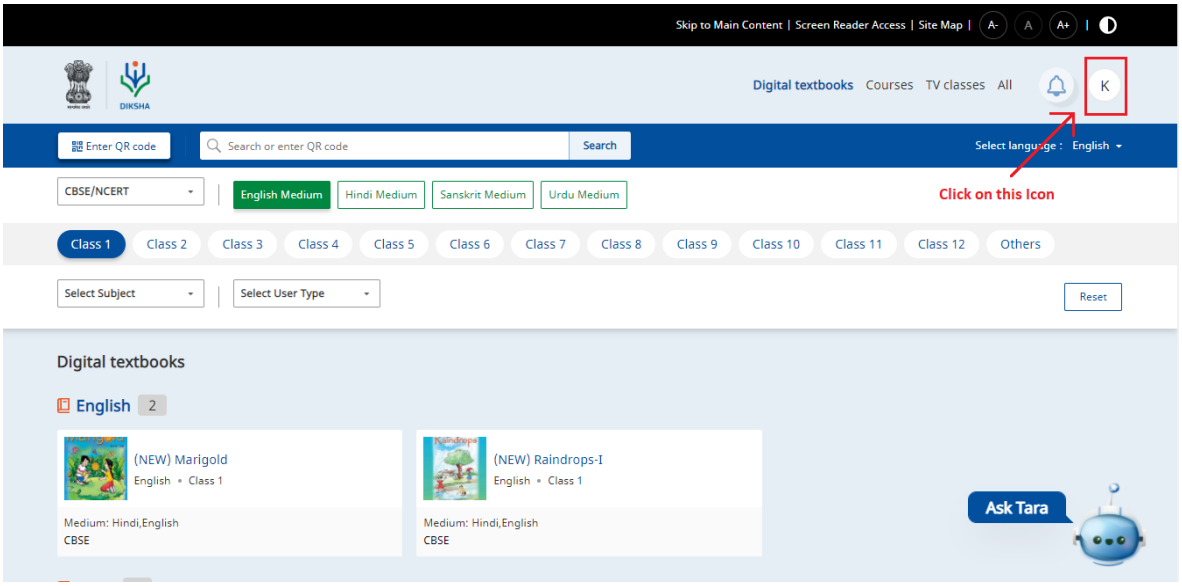

चरण 2 : जैसा कि दाहिने मेनू से लाल बॉक्स में हाइलाइट किया गया है, प्रोफ़ाइल विकल्प चुनें।

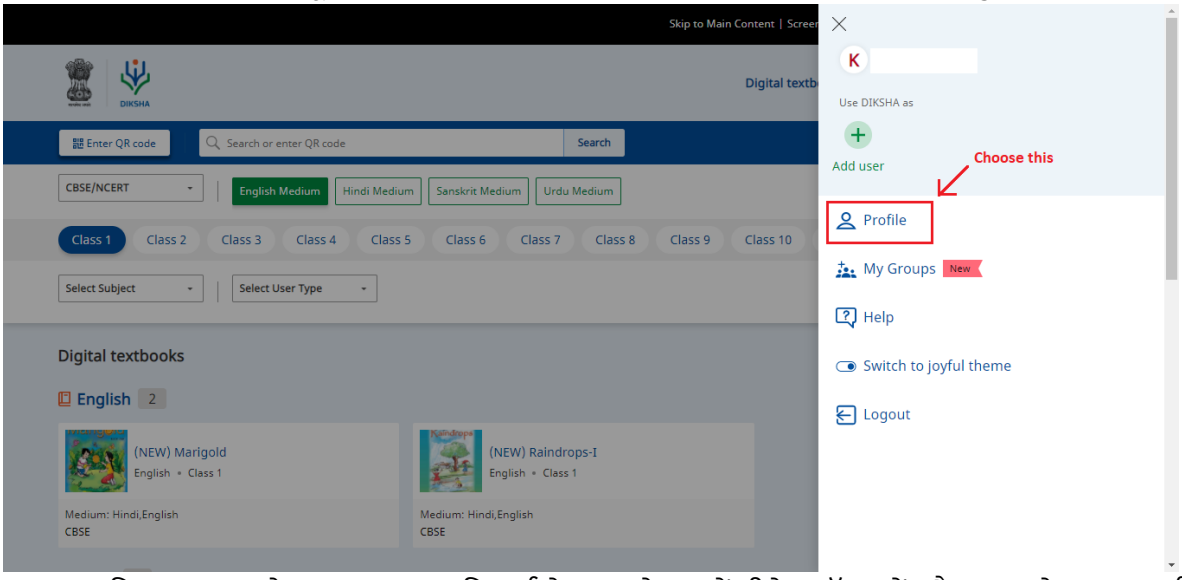

चरण 3 : फिर आपका प्रोफ़ाइल अनुभाग दिखाई देगा, आगे पृष्ठ में नीचे स्क्रॉल करें और आपको अपना माई लर्निंग एंड लर्नर पासबुक अनुभाग मिलेगा और फिर अपने पूरे किए गए पाठ्यक्रम से संबंधित प्रमाणपत्र को डाउनलोड करने के लिए लाल बॉक्स में हाइलाइट किए गए "प्रमाणपत्र डाउनलोड करें" बटन पर क्लिक करें। और आपका सर्टिफिकेट डाउनलोड होना शुरू हो जाएगा।

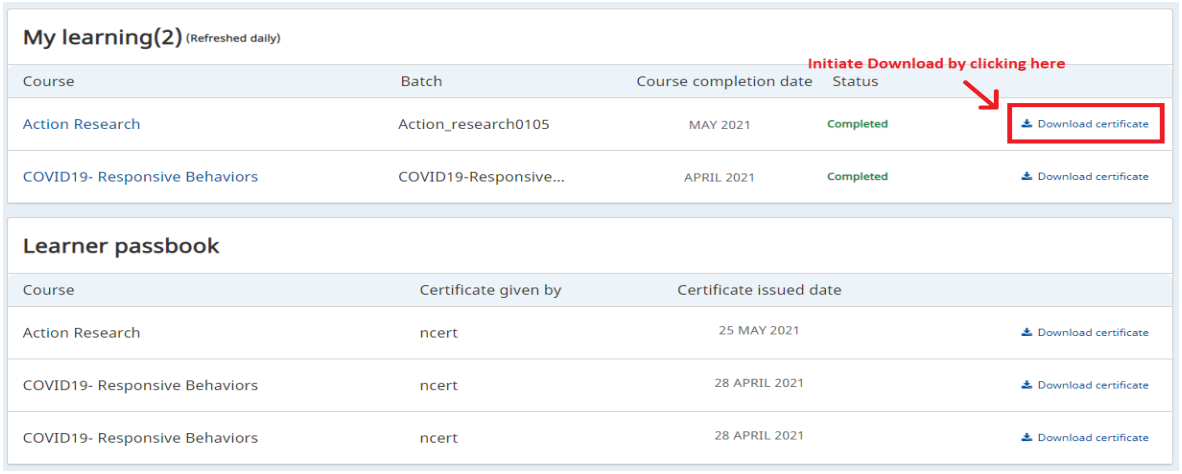

उद्देश्य (Slide Text) (10_2_hin_objectives)

उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद शिक्षार्थी सक्षम होंगे —

- 3-9 वर्ष की आयु के बच्चों के बीच बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को सुदृढ़ और नेतृत्व प्रदान करने के लिए ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण प्राप्त करने में;
- शिक्षकों की क्षमताओं को बढ़ाने और प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थी अधिगम में सुधार हेतु शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व पर एक समझ विकसित करने में;
- विद्यालयों के रूपान्तरण हेतु एक प्राथमिकता क्षेत्र के रूप में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को समेकित करने के लिए एक सहयोगपूर्ण विद्यालय विकास योजना बनाने में;
- बच्चों की शिक्षा के प्रारंभिक चरण के निर्माण में मदद करने के लिए अभिभावक और समुदाय के साथ संपर्क स्थापित करने में।

कोर्स की रूपरेखा (Slide Text) (10_3_hin_course_outline)

कोर्स की रूपरेखा

- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की अगुआई हेतु विद्यालय नेतृत्व पर दृष्टिकोण।
- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को सुदृढ़ बनाने हेतु शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व की समझ।
- एक संदर्भ-विशिष्ट विद्यालय विकास योजना की तैयारी।
- प्रभावी विद्यालय-समुदाय संबंध बनाने के लिए समुदाय और अभिभावक के साथ सबल साझेदारी का विकास।
- एफ.एल.एन. का विद्यालय प्रमुखों द्वारा क्रियान्वयन।

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) हेतु विद्यालय नेतृत्व पर रूपरेखा का विकास

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व : परिचय (Video)
(10_4_hin_leadership_for_foundational_literacy_and_numeracy_introduction)

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व : परिचय – लिप्यंकन (Text)
(10_5_hin_leadership_for_foundational_literacy_and_numeracy_introduction_transcript)

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व : परिचय – लिप्यंकन

विद्यालय के नेतृत्वकर्ताओं एवं शिक्षकों का स्वागत है!

हम सभी लोग सम्पूर्ण रूप से बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास के साथ ही बुनियादी रूप से साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान (एफ°एल°एन) के महत्व से पूरी तरह अवगत हैं। एफ°एल°एन बच्चों को किसी भी तथ्य के विषय में गंभीरता एवं रचनात्मक रूप से सोचने के साथ ही उनकी अपनी क्षमता के अनुसार अर्थ निर्माण करने की दिशा में समर्थ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे की वे अपनी क्षमता को पहचान सकें। यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि विद्यालय शिक्षा के बाद के श्रेणी में साक्षरता और संख्यात्मकता से संबन्धित ज्ञान शिक्षण से जुड़े सभी क्षेत्रों और विषयों में अनिवार्य रूप से लागू होते है। इसका प्रभाव महत्वपूर्ण रूप से भविष्य में बच्चों के सीखने से जुड़े संभावनाओं पर भी पड़ता है। इसलिए, तो भारत में एक समान और समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए, समग्र रूप से छोटे बच्चों के बीच साक्षरता और संख्यात्मक कौशल को सुदृढ़ करना अनिवार्य है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में एफ°एल°एन के महत्व की परिकल्पना की गई है एवं 3-8 वर्ष के आयु-वर्ग को बुनियादी चरण के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। यह नीति कक्षा-3 में प्रवेश करने से पूर्व ही बच्चे पढ़ने और लिखने में निपुण एवं सक्षम हो जाएँ इस परिकल्पना पर आधारित है। हालाँकि, निपुण भारत- नेशनल इनिशिएटिव फॉर प्रोफिशिएंसी विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमेरसी - मिशन के द्वरा 9 वर्ष की आयु तक को मूलभूत या बुनियादी चरण के रूप में जोड़ा गया है, जिसका अर्थ है कि 'निष्ठा' में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता की दृष्टिकोण से 3-9 वर्ष के आयु-वर्ग के बच्चे शामिल हैं। इस प्रकार एफ°एल°एन, विद्यालय जाने के पहले से श्रेणी-3 तक है। बच्चों के लिए श्रेणी-3 एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में है, जहाँ से बच्चे आगे की कक्षाओं में 'लर्न टू रीड' से 'रीड टू लर्न' की दिशा मे आगे की श्रेणियों की ओर बढ़ते हैं। 'निपुण भारत' 2026 से 2027 तक एफ°एल°एन की दक्षताओं से प्राप्त होने वाली उपलब्धियों के क्रियान्वयन की कल्पना करता है।

चूंकि एफ°एल°एन पहली बार विद्यालयों में प्रस्तुत किया जा रहा है, तो ऐसे में इस पहल का उचित रूप से क्रियान्वयन हो सके इसलिए इस प्रक्रिया में प्राथमिक विद्यालय के प्रबंध के स्तर पर संबंधित पदाधिकारियों एवं विद्यालय के नेतृत्व-कर्ताओं की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। बच्चे को इस पाठ्यक्रम के केंद्र में रखते हुए, विद्यालय प्रमुख लीडरशिप फॉर फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरसी" को बुनियादी रूप से साक्षरता एवं संख्यात्मकता के आधार पर3-9 वर्ष के आयु-वर्ग के बच्चों के बीच सीखने की क्षमता का नेतृत्व करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और विज़न के साथ विद्यालय के नेतृत्वकर्ताओं तथा शिक्षकों को समर्थ बनाने की दृष्टिकोण से विकसित किया गया है।

यह पाठ्यक्रम विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों को अनुकूलनीय एवं सहयोगी नेतृत्वकर्ता के रूप में अपनी नेतृत्व क्षमता को विकसित करने में सहयोग प्रदान करता है, साथ ही विद्यालयों में 3-9 आयु-वर्ग के बच्चों के बीच अपनी क्षमता को विकसित करने में मदद करता है, जिससे ये बच्चे अपने अभिभावक एवं समुदाय के साथ सामंजस्य बनाने के नए तरीके सीख सकें। इस पाठ्यक्रम की मुख्य अवधारणा एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व-कर्ता के ऊपर आधारित है, जो एक नेतृत्व-कर्ता के रूप में विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक विधाओं एवं इनका अनुप्रयोग करना जानता हो साथ ही यह नेतृवकर्ता शिक्षकों को प्रशिक्षित करने, एफ°एल°एन के क्रियान्वयन के लिए प्रासंगिक आकलन विकसित करने एवं विद्यालय में विद्यार्थियों के शिक्षण एवं सीखने के लिए अनुकूल संस्कृति का निर्माण कर सकने में भी सक्षम हो।

यह कोर्स व्यवसाय-केंद्रित है, इसलिए इसे उपयोगकर्ता के अनुकूल बनाने के लिए, स्व-शिक्षण सामग्री के रूप में निर्मित किया गया है, जिसमें चिंतनशील लेखन, कार्य-कलाप, केस स्टडी और वीडियो-आधारित सत्रों को सम्मिलित किया गया है।

मित्रों, मुझे उम्मीद है कि इसके माध्यम से आप लोग भारतीय संदर्भ में एफ°एल°एन की अवधारणा से संबन्धित दृष्टिकोण को संक्षिप्त रूप से समझ पाएंगे। यह सिर्फ एक संक्षिप्त स्नैपशॉट (लघुचित्र) है; हालांकि, हम समझते हैं कि प्रत्येक विद्यालय की अपनी विशिष्ट चुनौतियाँ होती हैं। यह नेतृत्व की नई भूमिका आपसे ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के एक विशेष औपचारिकता की मांग करती है जिसे आप इस कोर्स के माध्यम से विस्तार के साथ समझ पाएंगे।

सभी को शुभकामनाएँ।

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व पर एक दृष्टिकोण का निर्माण (Text) (10_6_hin_perspective_leadership)

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व पर एक दृष्टिकोण का निर्माण

वैश्विक स्तर पर, यह एक स्थापित तथ्य है कि सीखने का प्रारंभिक चरण बच्चे के विकास पथ में सबसे महत्वपूर्ण है और यह उसके स्वास्थ्य और सीखने के स्तर को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। वास्तव में, सभी के लिए समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का वादा करने वाले 'सतत विकास लक्ष्य 4' की प्राप्ति के लिए बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) से जुड़ी दक्षताओं को प्राप्त करना महत्वपूर्ण है। इन दक्षताओं में सामाजिक-भावनात्मक कौशल, साक्षरता, संख्या ज्ञान और यहाँ तक कि बाल-कल्याण भी शामिल है। एफ.एल.एन. को "कौशलों का प्रवेश द्वार" (गेटवे स्किल) माना जाता है क्योंकि यह औपचारिक विद्यालयी शिक्षा प्रक्रियाओं में बच्चे के प्रवेश को चिह्नित करता है।

भारत में विद्यालयी शिक्षा में अभूतपूर्व उपलब्धियों के बावजूद, सीखने के स्तरों में व्यापक अंतराल के साथ "सीखने के संकट" की एक सतत चिंता बनी हुई है। जनसंख्या के गरीब और वंचित वर्गों से आने वाले बच्चों के संदर्भ में ये अंतराल और व्यापक हो जाते हैं। इसके अलावा, सीखने में आए ये अंतराल वर्ष-प्रतिवर्ष "संचयी रूप से सीखने की कमी" (cumulative learning deficit) में बदल जाते हैं, जिसे सरल शब्दों में, किसी विद्यालय में साल-दर-साल बच्चे की प्रगति में आने वाले सीखने के अंतरालों को एक साथ जोड़कर देखने के रूप में समझा जा सकता है। एक बच्चा जो बुनियादी गणितीय गणनाएं कर सकने या ग्रेड 3 तक अवधारणात्मक समझ के साथ पढ़ने में असमर्थ है, वह उच्च प्राथमिक या माध्यमिक स्तर पर आवश्यक दक्षताओं को सीखने में प्रायः असमर्थ होता है। नतीजतन, बच्चे में सीखने की कमी संचित होती जाती है।

भारत में, सरकारी विद्यालयों में नामांकित अधिकांश बच्चे पहली पीढ़ी के विद्यार्थी हैं, जिसका मतलब है कि उनके पास अपने परिवारों की तरफ से मिल सकने वाला कोई सुदृढ़ शैक्षणिक सहयोग तंत्र नहीं है। अब तक, विभिन्न राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में चली आ रही अलग-अलग परिपाटियों के अनुसार किसी बच्चे के लिए औपचारिक विद्यालयी शिक्षा में प्रवेश की आयु 5+ या 6 वर्ष बनी हुई है। इस प्रकार, विद्यालय में दाखिला लेने से पहले एक बच्चा घर, आँगनवाड़ी या देश-भर के बहुत थोड़े से सरकारी विद्यालयों में अवस्थित पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों में सम्बद्ध गतिविधियों में लगा रहता है। बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को हासिल करने हेतु राष्ट्रीय मिशन 'निपुण' के महत्व को इस संदर्भ में समझा जा सकता है कि यह मिशन 3 साल की आयु से बच्चों को सीखने का एक सुविधाजनक माहौल उपलब्ध कराने और उन्हें उच्चतर कक्षाओं हेतु आवश्यक दक्षताओं को विकसित करने के लिए तैयार करने में मदद करना चाहता है। हालांकि, हम जानते हैं कि 3 साल की आयु में एक बच्चा अपनी माँ और अपने परिवार के साथ निकटता से जुड़ा होता है। 3-5 वर्ष के आयु वर्ग में, एक बच्चे को सामाजिक-भावनात्मक कौशलों, संज्ञानात्मक एवं पोषणीय विकास के लिए अपने परिवार और हमजोलियों के साथ घनिष्ठ संबंध की आवश्यकता होती है। इस चरण के दौरान आँगनवाड़ी और विद्यालय (जिससे आँगनवाड़ी जुड़ी हुई है) की ज़िम्मेदारी बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। अपने जनपद एवं ब्लॉक स्तरीय निगरानी तंत्र के साथ, महिला और बाल विकास मंत्रालय की 'समेकित बाल विकास परियोजना' (आई.सी.डी.एस) अपने प्रमुख कार्यकर्ताओं, सी.डी.पी.ओ. और आँगनवाड़ी के माध्यम से 3-6 वर्ष की आयु के बच्चों के संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक कौशल विकास की ओर ध्यान देने हेतु उत्तरदायी है। एफ.एल.एन. पर राष्ट्रीय मिशन के अंतर्गत, अब प्राथमिक/संयुक्त विद्यालय (वह विद्यालय जिसमें प्राथमिक और पूर्व-प्राथमिक, दोनों की कक्षाएं शामिल हों) के नेतृत्वकर्ता को यह सुनिश्चित करने के लिए नेतृत्व और पहल करनी चाहिए कि 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चे निम्नलिखित तीन विकास लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। जो निम्नलिखित चित्र में दर्शाए गए हैं :

चित्र 1 : बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विकासात्मक लक्ष्य

इसके अतिरिक्त, एफ.एल.एन. पर राष्ट्रीय मिशन ने सीखने के प्रारंभिक चरण को अधिगम प्रतिफलों (स्तर 1 से स्तर 6) के लिए परिभाषित स्तरों के साथ निम्नलिखित चरणों में विभाजित किया है। एफ.एल.एन. से संबंधित दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों पर विस्तृत समझ के लिए आप पहले के मॉड्यूलों का संदर्भ ले सकते हैं।

- पूर्व-प्राथमिक – मुख्यतः प्राथमिक विद्यालयों के परिसर में स्थित आँगनवाड़ी केंद्रों या पूर्व-प्राथमिक केंद्रों में आयोजित किया जाता है। पूर्व- प्राथमिक स्तर 3-6 वर्ष के आयु वर्ग वाले बच्चों के अनुरूप है, जिनमें से पहले दो वर्ष 3-5 की आयु वाले बच्चे आंगनवाड़ी में व्यतीत करते हैं और 5-6 वर्ष आयु वाले बच्चे एफ.एल.एन. मिशन के तहत बालवाटिका में।

- विद्याप्रवेश – एफ.एल.एन. मिशन के तहत, विद्याप्रवेश एक विशेष रूप से निर्मित किया गया 3 महीने का खेल आधारित कोर्स है जिसे कक्षा I के पहले तीन महीनों में सभी बच्चों के साथ व्यवहार में लाया जाना है।

- कक्षा I से III यह कक्षा 6-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के अनुरूप हैं, जिसकी कक्षाएँ प्राथमिक विद्यालय में आयोजित की जाती हैं।

यदि विद्यालय एक संयुक्त विद्यालय है, तो उच्च प्राथमिक या माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक को विद्यालयी शिक्षा प्रक्रियाओं में पूर्व-प्राथमिक विद्यालय को समेकित करने का बीड़ा उठाना होगा।

प्रारंभिक शिक्षा के चरण		**संबंधित आयु वर्ग**	**एफ.एल.एन. में परिभाषित सीखने के प्रतिफलों के अनुरूप स्तर**
पूर्व-प्राथमिक विद्यालय	*आंगनवाड़ी*	3-5	L1+ L2
	बालवाटिका	5-6	L3
कक्षा I, II एवं III	विद्याप्रवेश कक्षा I के पहले तीन महीनों में सभी बच्चों को प्रदान किया जाने वाला 3 महीने का खेल-आधारित कोर्स है।	6-9	L4+ L5+ L6

एफ.एल.एन. में उल्लेखित"पढ़ने के लिए सीखना "(लर्न टू रीड) से "सीखने के लिए पढ़ना" (रीड टू लर्न) की अवधारणा क्या है?

यह अवधारणा बताती है कि कैसे पूर्व-प्राथमिक चरणों में बच्चे बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करते हैं, जैसा कि निष्ठा-एफ.एल.एन. में उल्लिखित है, ताकि विद्यालयी शिक्षा के बाद के वर्षों में वे अपने दम पर पाठ, संख्या और ज्ञान के क्षेत्र से जुड़ने में सक्षम हो जाएँ। विद्यालयी शिक्षा के बाद के चरणों में, बच्चे "सीखने के लिए पढ़ना" के प्रति आत्मविश्वासी बनें। हालाँकि, इसका यह मतलब नहीं है कि शिक्षक की भूमिका महत्वहीन हो जाती है। वह एक सुगमकर्ता बने रहते हैं और बच्चों को उनके सीखने की गति में सहायता करते हैं। इस प्रकार "पढ़ने के लिए सीखना" से "सीखने के लिए पढ़ना" का तात्पर्य है कि विद्यालय नेतृत्व द्वारा बच्चों के बुनियादी कौशल के निर्माण के लिए परिस्थितियों को विकसित किया जाना होगा ताकि बच्चे बाद के चरणों में शिक्षकों की मदद से पूरे विश्वास के साथ अपनी अधिगम प्रक्रिया को बढ़ा सकें।

एफ.एल.एन. के संदर्भ में विद्यालय नेतृत्व विकास पर मॉडल (Text) (10_7_hin_models_leadershi_fln)

एफ.एल.एन. के संदर्भ में विद्यालय नेतृत्व विकास पर मॉडल

एफ.एल.एन. पर मिशन ने हमारे सामने एक अनूठी चुनौती पेश की है जिसका बाल-कल्याण और सीखने के स्तर पर दूरगामी प्रभाव पड़ेगा। विद्यालय स्तर पर शैक्षणिक और प्रशासनिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, प्राथमिक विद्यालय या संयुक्त विद्यालय के एक नेतृत्वकर्ता को नेतृत्व पर ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति के संदर्भ में अपनी योग्यता का निर्माण करने की आवश्यकता है। यह आपको इस बारे में एक संक्षिप्त समझ देगा कि एफ.एल.एन. को सफल बनाने के लिए अपने विद्यालय का नेतृत्व कैसे करें। नीचे चार मॉडल दिए गए हैं —

- **संदर्भ-विशिष्ट नेतृत्व** – नेतृत्व पर उपलब्ध साहित्य में, इस मॉडल को संभवतः नेतृत्वकर्ताओं के बीच सबसे अधिक महत्व प्राप्त हुआ है। हम जानते हैं कि प्रत्येक विद्यालय की अपनी एक अद्वितीय भौगोलिक स्थिति है और यह किसी विशिष्ट भौगोलिक विविधता और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। आपका विद्यालय बाढ़ की आशंका वाले क्षेत्र, संघर्ष क्षेत्र, जंगलों या रेगिस्तान से घिरा हो सकता है, या कि बहुत ऊंचाई वाले क्षेत्र पर स्थित हो सकता है। पूर्व-प्राथमिक विद्यालय/आँगनवाड़ी या विद्यालय क्षेत्र में बच्चों के सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक संदर्भ भी उस क्षेत्र विशेष के अनुसार होते हैं। ऐसी स्थितियों में, बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को सुदृढ़ करने हेतु विद्यालय नेतृत्व के लिए यह ज़रूरी है कि उसके पास 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों की पारिवारिक पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक संदर्भों की गहरी समझ हो। इसका अर्थ यह भी है कि नेतृत्वकर्ता और शिक्षकों को उस क्षेत्र विशेष के निवासियों द्वारा बोली जाने वाली प्रमुख भाषा या बोलियों के साथ ही साथ, इस आयु वर्ग के बच्चों की विकास संबंधी आवश्यकताओं का भी ज्ञान हो। क्षेत्र के बहुत से बच्चे ऐसे होंगे जो आंगनवाड़ी/पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में नहीं जाते होंगे, इसलिए नेतृत्व दल को स्थानीय लोगों और समुदाय को पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में बच्चों के नामांकन के लिए एक माहौल निर्मित करके प्रभावित करना होगा। ये अंतर-वैयक्तिक कौशल विद्यालय और लोगों के संदर्भों से निकलेंगे। संदर्भ-विशिष्ट नेतृत्व का अर्थ यह भी होगा कि नेतृत्व दल को पूर्व-प्राथमिक विद्यालय और बालवाटिका के संदर्भों के अनुसार शैक्षणिक और प्रशासनिक संसाधन उपलब्ध करवाने हों।

- **अनुकूलक नेतृत्व** – एफ.एल.एन. के संदर्भ में, एक नेतृत्वकर्ता की ज़िम्मेदारी होगी कि वह स्वयं को और शिक्षकों को इसके क्रियान्वयन से उभरने वाली नई चुनौतियों के अनुकूल बनाने हेतु तैयार करे। यह एक गतिशील प्रक्रिया है। अनुकूलक नेतृत्व नेतृत्वकर्ता को उन समस्याओं और चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार करता है, जो स्पष्ट नहीं हैं या सिर्फ़ नेतृत्वकर्ताओं के प्राधिकार अथवा विशेषज्ञता से हल नहीं की जा सकती। इसके अलावा, बहुत सी चुनौतियाँ बच्चे और उनके परिवारों की आवश्यकताओं और उनकी समय की माँग के साथ सामंजस्य बैठाने के साथ आएंगी। एक अनुकूलक नेतृत्वकर्ता को लोगों को जोड़ने और संगठित करने तथा लोगों की मान्यताओं, धारणाओं, विश्वासों, दृष्टिकोण एवं व्यवहारों पर उन्मुक्त चर्चा की आवश्यकता पड़ेगी। एफ.एल.एन. के विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक विज़न बनाने हेतु इसकी आवश्यकता होगी। एक अनुकूलक नेतृत्वकर्ता की कुछ विशेषताएं हैं —
    - प्रभाव डालना
    - अभिभावक और बच्चों की विभिन्नता को अपनाना
    - विश्वास पैदा करना
    - कठिन, बहुआयामी और अनुकूलक चुनौतियों से निपटना
    - रचनात्मकता के लिए जगह बनाना
    - मुख्यधारा से बाहर के, हाशिए के लोगों की बात सुनना, ताकि वे सभी स्वयं को मूल्यवान और महत्वपूर्ण महसूस कर सकें।

- लोगों के साथ मिलकर "व्यावहारिक समाधान" निकालना

- **सहयोगात्मक नेतृत्व** – नेतृत्व का यह रूप मानवीय अंतःक्रियाओं पर आधारित है। इसका तात्पर्य व्यक्तियों, विचारों, निर्णयों और घटनाओं के परस्पर सहयोग से है। सहयोगात्मक प्रक्रियाएँ महत्वपूर्ण लक्ष्यों, व्यापक सहभागिता और निर्णय लेने में सहयोग को प्राप्त करने हेतु साझी प्रतिबद्धता और विद्यार्थियों के सीखने के प्रतिफलों हेतु साझी जवाबदेही को बढ़ावा देती हैं। एक सहयोगात्मक नेतृत्वकर्ता को सभी हितधारकों को एक साथ लाने और निम्न सुविधाएँ प्रदान करने की आवश्यकता है —
  - एक साझा विज़न का निर्माण, जिसे पूरा करने के लिए लोग सहयोगात्मक रूप से काम करें
  - कामों का बँटवारा
  - प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को प्रोत्साहन देने वाली स्थितियाँ
  - व्यावसायिक शिक्षण (प्रोफेशनल लर्निंग) और विनिमय (एक्सचेंज) पर अपना और शिक्षकों का क्षमता विकास
  - नेतृत्व का अभ्यास करना जो एफ.एल.एन. कौशलों को सुदृढ़ करने पर पड़ने वाले प्रभाव से शिक्षकों की निर्देशात्मक विशेषज्ञता में सुधार हेतु विद्यालय की क्षमता को बढ़ाता है
  - आपसी सम्मान का निर्माण
  - हितधारकों की भागीदारी
  - साझा ज़िम्मेदारी

- **परिवर्तनकारी नेतृत्व** – परिवर्तनकारी नेतृत्व वह प्रक्रिया है, जिसमें नेतृत्वकर्ता दूसरों के साथ जुड़ता है और एक संबंध स्थापित करता है, ताकि नेतृत्वकर्ता और उसके सहयोगियों, दोनों की प्रेरणा और पेशेवर नैतिकता में वृद्धि हो। परिवर्तनकारी नेतृत्व का केंद्र एक फलदायी विद्यालय संस्कृति की स्थापना तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं की गुणवत्ता बढ़ाने, लोगों को विकसित करने और संगठन में सुधार करने हेतु एक स्पष्ट एवं सहयोगात्मक विज़न के निर्माण पर है। नेतृत्वकर्ता न केवल बदलती परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बनाते हैं, बल्कि एक विज़न रखते हुए, नयी पहलकदमियों और समस्या-समाधान के नज़रिए को अपना कर मौजूदा व्यवस्था में बदलाव लाने और उसे रूपांतरित करने का प्रयास करते हैं।

चित्र 2 : एफ.एल.एन. को सुदृढ़ करने हेतु विद्यालय नेतृत्व विकास पर विभिन्न मॉडल

गतिविधि 1 : स्वयं करें (Text) (10_8_hin_activity1_try_yourself)

गतिविधि 1 : एफ.एल.एन. के लक्ष्यों हेतु संदर्भ आधारित विद्यालय मार्गों को परिभाषित करना - स्वयं करें

एफ.एल.एन. मिशन के लक्ष्य	**एक नेतृत्वकर्ता के रूप में क्रियान्वयन हेतु आपके मुख्य कदम क्या होंगे?**	**आप किन हितधारकों को शामिल करेंगे?**
दैनिक जीवन स्थितियों और बच्चों की स्थानीय भाषाओं के औपचारिक समावेश को मिलाकर एक समावेशी कक्षा-गतिविधि आधारित शिक्षाशास्त्र का निर्माण		
लिखने-पढ़ने के सतत कौशलों की समझ के साथ बच्चों को प्रेरित, स्वतंत्र और प्रवृत्त पाठक और लेखक बनने में सक्षम बनाना		
संख्या ज्ञान और स्थानिक समझ (किसी वस्तु के आकार, स्थिति व क्षेत्र से संबंधित) कौशलों के माध्यम से, बच्चे संख्या, माप और स्थान के क्षेत्र में तर्क को समझते हैं		
बच्चों की परिचित/स्थानीय/मातृभाषाओं में उच्च गुणवत्ता और सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण-अधिगम सामग्री की उपलब्धता और प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करना		
शिक्षकों और संसाधन व्यक्तियों का क्षमता निर्माण		
आजीवन सीखने के लिए सभी हितधारकों के साथ जुड़ना		
पोर्टफ़ोलियो, समूह और सहयोगात्मक कार्य, प्रश्नोत्तरी, भूमिका निर्वहन (रोल प्ले), खेल, मौखिक प्रस्तुतीकरण, लघु परीक्षण आदि के माध्यम से विद्यार्थियों का आकलन		
सभी विद्यार्थियों के सीखने के स्तरों पर नज़र रखना		

गतिविधि 2 : अपने विचार साझा करें (Text - Blog) (10 _9_hin_activity2_reflect)

गतिविधि 2 : अपने विचार साझा करें

3-9 वर्ष की आयु के बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए आप विभिन्न हितधारकों के साथ कैसे जुड़ सकते हैं? विद्यालय के एक नेतृत्वकर्ता के रूप में अपनी भूमिका पर विचार करें।

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व

शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कौन है? (Video) (10_10_hin_who_is_a_pedagogical_leader)
शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कौन है? – लिप्यंकन (Text)
(10_11_hin_who_is_a_pedagogical_leader_transcript)

शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कौन है? - लिप्यंकन

डॉ. पूजा- नेतृत्वकर्ताओं एवं शिक्षकों का स्वागत है। हम सभी जानते हैं कि 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान(एफ. एल. एन.)' अब एक राष्ट्रीय मिशन बन गया है जिसमें नेतृत्वकर्ताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह पाठ्यक्रम नेतृत्वकर्ता से 3-9 वर्ष के आयु वर्ग वाले छोटे बच्चों के बीच बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) को सुदृढ़ करने के लिए जरूरी अपेक्षाओं और आश्यकताओं को पूरा करने की आशा करता है। यह नेतृत्वकर्ताओं को शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ताओं के रूप में देखता है।

आइए हम एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता बनने की आवश्यक शर्तों के बारे में चर्चा करें। हमारे साथ प्रो. सुनीता चुग़ और डॉ. चारु समिता मलिक मौजूद हैं और मैं हूँ डॉ. पूजा सिंघल।

प्रो. सुनीता से डॉ. पूजा : प्रो. सुनीता, एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कौन होता हैं? वह क्या करता है?

प्रो. सुनीता- डॉ. पूजा, शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता, एक ऐसा व्यक्ति है जिसके पास विभिन्न विषयों और अनुशासनों के शिक्षाशास्त्रों का नेतृत्व करने के लिए उपयुक्त ज्ञान और विनमय कौशल की गहरी समझ होती है। शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता का उद्देश्य सभी बच्चों के सीखने के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाना एवं उन्हें सीखने के वांछित परिणाम प्राप्त करने में मदद करना होता है। इसके लिए सुनियोजित शिक्षाशास्त्रीय अभ्यासों की आवश्यकता होती है जो बच्चों के समग्र विकास में योगदान दे सकें जिसमें सभी विकासात्मक कार्यक्षेत्र (डोमेन)- शामिल हैं जो एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

प्रो. सुनीता से डॉ. पूजा : 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ. एल. एन.)' के संदर्भ में एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता का क्या महत्व है?

प्रो. सुनीता : जैसा कि आप जानते हैं कि बच्चों की शिक्षा का आधारभूत चरण उनके संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक एवं रचनात्मक विकास के लिए अहम है। 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के विद्यार्थी अपने जीवन पथ के शुरूआती दौर में होते हैं इसलिए विद्यालयी शिक्षा प्रक्रियाओं को उनके नए कौशल सीखने के अनुभव, प्रयोग और स्वतंत्र इच्छा के अनुरूप होना चाहिए। 3-6 वर्ष के आयु वर्ग वाले बच्चों को प्रमुख रूप से खेल-खेल में शिक्षा दी जाती है एवं 6-9 वर्ष की आयु के दौरान उनकी बुनियादी साक्षरता और अंकगणितीय कौशल सुदृढ़ किए जाते हैं। इसके अलावा, यह शिक्षाशास्त्र 'चॉक और बात' पद्धति पर आधारित नहीं हैं, बल्कि यह गतिविधि-आधारित सीखने और प्रयोग से प्राप्त अनुभव पर केंद्रित हैं। इसे सुविधाजनक बनाने के लिए, एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता को पूर्व-प्राथमिक विद्यालय एवं प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, बालवाटिका शिक्षकों, व्यवस्था स्तरीय पदाधिकारियों और सी.डी.पी.ओ. (बाल विकास परियोजना अधिकारी) के साथ सहयोग करने की आवश्यकता है।

डॉ. चारु से डॉ. पूजा - इससे हमें यह स्पष्ट होता है कि छोटे बच्चों के लिए शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता की आवश्यकता क्यों है। डॉ. चारू, मैं आपसे जानना चाहती हूँ कि एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता का परिप्रेक्ष्य क्या होना चाहिए। वह अपने विद्यालय के लिए एक विज़न कैसे बना सकता/सकती है?

डॉ. चारू- डॉ. पूजा जैसा कि आप जानती हैं, विज़न निर्माण विद्यालय के नेतृत्व करने का एक मुख्य तत्व है। चूंकि बच्चों की शिक्षा के आधारभूत स्तर पर कई हितधारकों जैसे- बालवाटिका शिक्षक, आंगनवाड़ी, विद्यालय प्रमुख, सी.डी.पी.ओ., अभिभावक, समुदाय एवं ब्लॉक एवं जिला स्तर के शिक्षा अधिकारियों के समर्थन और योगदान की आवश्यकता होती है, एक नेतृत्वकर्ता को इन सभी को बाल विकास के मुद्दों पर बातचीत करने के लिए एक साझा मंच पर एक साथ लाने में सक्षम होना चाहिए। एक नेतृत्वकर्ता का विजन 3-9 वर्ष के बच्चों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के गहन कौशल के साथ तैयार करना होना चाहिए। यह बच्चों को कक्षा III के लिए सीखने की दक्षता हासिल करने और कक्षा IV में सुचारू रूप से प्रवेश लेने में सक्षम बनाएगा। भविष्यवादी दृष्टि के साथ-साथ एक व्यावहारिक दृष्टि, नेतृत्व समूह को एक विशिष्ट समय सीमा के भीतर लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करती है। विज़न का यह एक उदाहरण हो सकता है :-

"एक ऐसे सुरक्षित एवं आनन्ददायी विद्यालय वातावरण का निर्माण, जहाँ 3-9 वर्ष की आयु के बच्चे बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान एवं दक्षताओं को प्राप्त कर सकें, साथ ही रचनात्मक प्रयोग एवं अन्वेषण कौशल को विकसित कर सकें।"

डॉ. चारू से डॉ. पूजा - डॉ. चारू चूंकि हम बहुत कम उम्र के बच्चों की बात कर रहे हैं तो वयस्कों का बच्चों के साथ कैसा संबंध होना चाहिए?

डॉ. चारू : देखिए डॉ. पूजा, जब हम विद्यालय की किसी भी प्रक्रिया की रूपरेखा, अवधारणा निर्माण या उसे क्रियान्वित करते हैं, तो हमें बच्चे को ध्यान में रखना चाहिए या यूँ कहें कि "केंद्र में बच्चे" को रखना चाहिए। इससे बच्चों को आत्मनिर्भर बनने, तार्किक सोच के विकास और साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के बुनियादी कौशल को विकसित करने में मदद मिलेगी। यह उनकी विद्यालयी शिक्षा के भविष्य में आने वाले चरणों में अकादमिक रूप से अच्छा प्रदर्शन करने में सहायता करेंगे। हालांकि, यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि नेतृत्वकर्ता एवं शिक्षक नेतृत्वकर्ता, वयस्कों के रूप में, अपने अंदर के "बच्चे" को जीवित रखें। जब वयस्क स्वयं को "बच्चे" की तरह बच्चों के साथ जोड़ते हैं, तो रिश्ता गहरा और अधिक सार्थक हो जाता है। यह विश्वास और एक खुशहाल वातावरण निर्मित करने में मदद करता है जिससे वयस्क और बच्चे दोनों साथ मिलकर कार्य और विकास करते हैं।

डॉ. पूजा से डॉ. चारू : डॉ. पूजा, आपने नेतृत्व गुणों पर शोध किया है। आपके अनुसार एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ताकि कुछ बुनियादी नेतृत्व गुण क्या हो सकते हैं?

डॉ. पूजा : हां डॉ. चारू, चूंकि हम 3-9 वर्ष की आयु-वर्ग के बच्चों के साथ काम कर रहे हैं, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि मुख्य विशेषताओं में से एक विशेषता **सकारात्मकता और सहज मानसिकता** पर आधारित हो। एक सकारात्मक संरचना के अंतर्गत, एक नेतृत्वकर्ता एवं शिक्षकों को अपनी मानसिकता और विज़न दोनों में सहजता लानी चाहिए।

हम जानते हैं कि 3-6 वर्ष के आयु-वर्ग के बच्चों की ध्यान अवधि बहुत कम होती है, और उन्हें मुख्यरूप से खेल-आधारित शिक्षाशास्त्र के माध्यम से जोड़ने की आवश्यकता होती है। अक्सर यह देखा गया है कि बच्चे बहुत कम समय में बाहरी दुनिया की कई वस्तुओं या धारणाओं की ओर अपनी रुचि विकसित कर लेते हैं। एक नेतृत्वकर्ता को यह स्वयं सुनिश्चित करना होगा कि बच्चों के सीखने की यात्रा में सहायक बनाने के लिए शिक्षकों को किस प्रकार प्रशिक्षित करना चाहिए। वयस्कों से प्राप्त सहायता, सुविधा एवं सहयोग के साथ-साथ इस आयु-वर्ग के बच्चों

को स्वयं भी अपने सीखने की प्रक्रिया का नेतृत्व कर पाने में सक्षम होना चाहिए। कड़ा रवैया बच्चों के स्वभाव के विरुद्ध होता है, जिससे बच्चों के भीतर शिक्षा के प्रति अरुचि एवं विद्यालय छोड़ने की प्रवृति पैदा हो सकती है। आधारभूत स्तर पर विद्यालय प्रमुखों से संबन्धित अन्य विशेषताएँ इस प्रकार से हो सकती हैं :

- पहल करना
- मंच पर लोगों को एक साथ लाना
- विश्वास निर्माण
- भावनात्मक रूप से सहज होना एवं अन्य लोगों की भावनाओं को समझना
- कुशल पर्यवेक्षण
- बच्चों के विकास से संबन्धित आवश्यकताओं को समझना
- स्पष्टता
- शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व की समझ

डॉ. पूजा से डॉ. चारू : हाँ, बिलकुल ठीक कहा आपने। आइए हम शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व की ओर गहराई में उतरें। डॉ. पूजा, 3-9 वर्ष के आयु वर्ग वाले बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं के लिए कौन से शिक्षाशास्त्रीय विज़न नियोजित किए जा सकते हैं?

चित्र 3 : 3-9 वर्ष के आयु वर्ग वाले विद्यार्थियों के लिए शिक्षाशास्त्रीय दृष्टिकोण

डॉ. चारू से डॉ. पूजा - डॉ. चारू, विभिन्न शिक्षाशास्त्र हैं जिन्हें 3-9 वर्ष के आयु वर्ग वाले बच्चों के लिए नियोजित किया जा सकता है जैसे- विषय आधारित, नाटक आधारित, गतिविधि आधारित, परियोजना आधारित, खिलौना आधारित, कला आधारित, कहानी-कहना आदि। ये दृष्टिकोण छोटे बच्चों में रचनात्मकता और दक्षता विकसित करने में बहुत सहायक हैं। अगर हम कहानी कहने की बात करें तो इसमें भावनात्मक बुद्धि विकसित करने की क्षमता होती है और यह बच्चों को मानवीय व्यवहार और रिश्तों को समझने में भी सक्षम बनाता है। इसके अलावा, जानवरों और मनुष्यों-जानवरों-पौधों की बातचीत के इर्द-गिर्द केंद्रित लघु कथाएँ अवधारणाओं को वास्तविक दुनिया के अनुभवों से जोड़ती हैं। बच्चे नई शब्दावली और भाषा संरचना सीखने में सक्षम होते हैं। इसके बाद खेल आधारित दृष्टिकोण है जो की बच्चों के स्वभाव में प्राकृतिक रूप से होता है और उनका झुकाव भी खेल गतिविधियों के प्रति होता है। यह बच्चों को खेल-खेल में समस्याओं का पता लगाने, खोजने और उन्हें हल करने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, अपने दोस्तों के साथ लुका-छिपी खेलने से उन्हें समूह भावना, समन्वय, तार्किक सोच आदि की अवधारणाओं को समझने में मदद मिलती है। या हम विषय-आधारित दृष्टिकोण पर विचार कर सकते हैं - जिसमें पाठ्यचर्या के विभिन्न क्षेत्रों को एक दूसरे से जोड़ा जाता है और एक विषय के भीतर लाया जाता

है। विषय(थीम) के माध्यम से, बच्चे अपनी विशिष्ट क्षमता को पहचानते हैं और सीखने के विभिन्न तरीकों को खोज लेते हैं। उदाहरण के लिए, फलों या सब्जियों को एक विषय के रूप में रखते हुए, एक शिक्षक रंगों, आकृतियों, संख्याओं, आकारों, शब्दावली आदि की अवधारणाओं को सीखना में सुगम बना सकता है।

डॉ. चारू से डॉ. पूजा - डॉ. चारू, एक नेतृत्वकर्ता के लिए बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की गतिविधियों की योजना एवं आकलन के लिए प्रारंभिक चरण क्या होने चाहिए?

डॉ. चारू : बच्चों को सुविधाएँ उपलब्ध करवाने और सीखने की क्षमता को विकसित करने के लिए पहले विद्यालय प्रमुखों एवं शिक्षकों को बच्चों की विकास संबंधी जरूरतों के बारे में जागरूक होना होगा। प्रत्येक बच्चा अलग होता है और उसके सीखने की अपनी गति होती है। उदाहरण के लिए, कुछ बच्चे 3 वर्ष की आयु में स्पष्ट रूप से बोलना शुरू कर देते हैं जबकि कुछ थोड़ा-बहुत लिखने में भी सक्षम हो सकते हैं। बच्चों की ये विशेषताएं उम्र के साथ बढ़ती हैं, और छोटे और बड़े बच्चों की क्षमताओं में अंतर होता है। शिक्षकों को बच्चों के विकास और उनकी बदलती आवश्यकताओं की इस प्राकृतिक प्रक्रिया को समझने की आवश्यकता है।

चित्र 4 : FLN के सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए त्रिस्तरीय रणनीति

दूसरा, बच्चे की आवश्यकता के अनुसार विकास की दृष्टि से उपयुक्त व्यवहार (डेवलपमेंट एप्रोप्रिएट प्रेक्टिसिज़) को अपनाना है। इसकी पूर्व योजना हमेशा बेहतर परिणामों के लिए लाभदायक होती है। शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता यह सुनिश्चित करते हैं कि शिक्षक चरणबद्ध तरीके से अपनी गतिविधियों की योजना बनाएं। इसके लिए नेतृत्वकर्ता प्रिंट सामग्री, सुलभ खिलौने और वस्तुओं, पहेली आदि जैसे अन्य संसाधनों सहित कक्षाओं के माध्यम से पारस्परिक रूप से सीखने (इंटरैक्टिव लर्निंग) की प्रक्रिया के निर्माण पर ज़ोर दे सकते हैं। खिलौना या खेल-आधारित शिक्षणशास्त्र 3-6 आयु वर्ग के बच्चे को सीखने की प्रक्रिया में शामिल करने में सहायक है जबकि 6-9 आयु वर्ग के विद्यार्थियों के लिए अनुभवात्मक और कला-आधारित शिक्षा की अधिक आवश्यकता पड़ सकती है।

प्रो. सुनीता से डॉ. चारू : प्रो. सुनीता, आपको क्या लगता है कि बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को सुदृढ़ करने की इच्छा रखने वाले एक नेतृत्वकर्ता से सबसे महत्वपूर्ण अपेक्षा क्या है?

प्रो. सुनीता : डॉ. चारू, जैसा कि हम जानते हैं कि नेतृत्व स्वयं पर, दूसरों पर और विद्यालय की परिस्थितियों पर प्रभाव डालने की एक प्रक्रिया है। प्राथमिक या प्रारंभिक विद्यालय के नेतृत्वकर्ता के रूप में, एक विद्यालय प्रमुख से यह अपेक्षा की जाती है कि वह इतनी कम उम्र के बच्चों को सहजता से समझें, 3-9 वर्ष की आयु के बच्चों की विकासात्मक ज़रूरतों को जाने और विद्यालय प्रदान किए जाने वाली सुविधाओं (बुनियादी ढांचे, संसाधनों और

प्रिंट-समृद्ध वातावरण) से अवगत हो। सबसे महत्वपूर्ण अपेक्षा यह है कि प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों और बालवाटिका या पूर्व-प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को सुदृढ़ करने में सुगमकर्ताओं के रूप में कार्य करने के लिए प्रेरित करें।

शिक्षा के इस स्तर पर, विद्यालय और घर दोनों में एक सीखने का वातावरण विकसित करने हेतु एक नेतृत्वकर्ता के पास समुदाय, अभिभावक और अन्य हितधारकों के साथ संपर्क बनाने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और प्रवृति होनी चाहिए। उसे दोनों व्यवस्था स्तरीय कार्यकर्ता जैसे कि ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं सी.डी.पी.ओ. – आई.सी.डी.एस. योजना के बाल विकास कार्यक्रम अधिकारी के लिए संपर्क केंद्र बिंदु के रूप में भी कार्य करना चाहिए। अभिभावक और समुदाय के साथ संपर्क साधते समय विश्वास निर्माण एवं पारस्परिक संबंधों को समझना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

डॉ. पूजा – मित्रों, आशा है कि इस चर्चा ने एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता की अवधारणा को स्पष्ट करने में आपकी मदद की होगी। एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता, अपने समूह (टीम) के साथ, एक दृष्टिकोण का निर्माण करता है और विभिन्न रणनीतियों पर एक स्पष्ट रोडमैप तैयार करता है जैसे कि बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं का आकलन करना, एफ.एल.एन. कौशल को समर्थ करने के लिए विभिन्न आयु-उपयुक्त शिक्षाशास्त्रों को नियोजित करना, सीखने के अनुरूप आकलन पद्धति को निर्मित करना, अभिभावक, समुदाय और व्यवस्था स्तरीय कार्यकर्ता के साथ संपर्क साधना आदि। हस्तक्षेप के ये सभी क्षेत्र बच्चों को बाद की विद्यालयी शिक्षा हेतु उन्हें तैयार करने वाली दक्षताओं के निर्माण में उनकी मदद करेंगे। हालांकि, याद रखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता को 'बच्चे-बच्चे' और 'बच्चे-वयस्क' के बीच भयमुक्त और सार्थक बातचीत के लिए एक अनुकूल वातावरण विकसित करना चाहिए ताकि बच्चे एक आनंदमय तरीके से सीखें, सह-निर्माण करें, खोजे और प्रयोग करें।

गतिविधि 3 : अन्वेषण (H5P - Image Hotspot) (10_12_hin_activity3_explore)

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व पर रूपरेखा – अन्वेषण

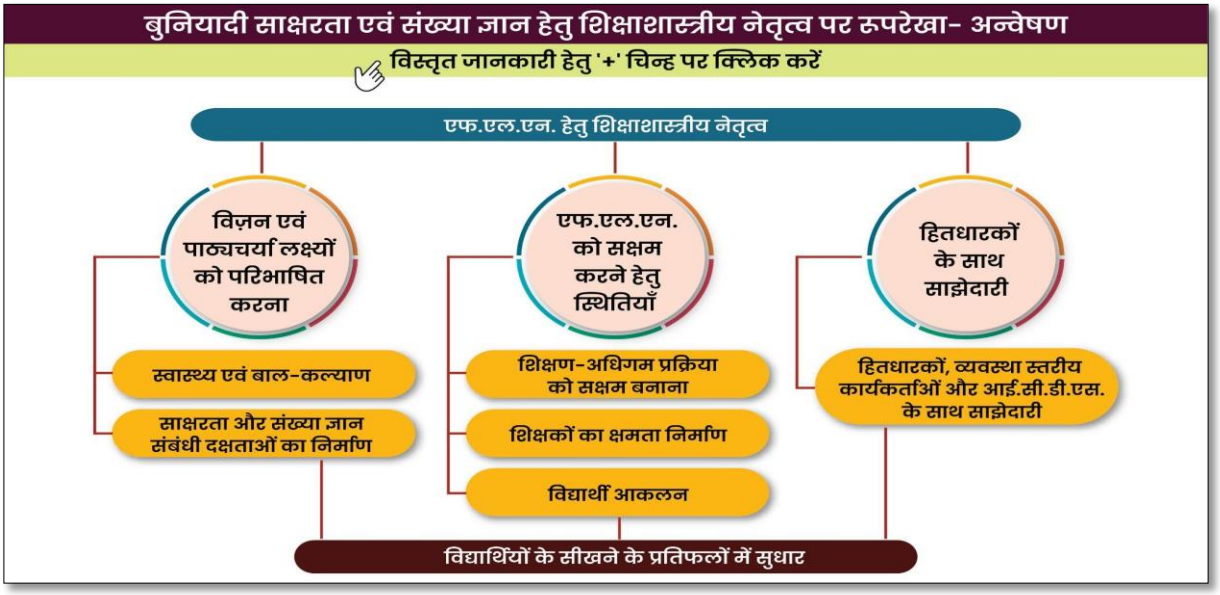

https://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1675

एफ.एल.एन. हेतु शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व- शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व में विद्यालय की सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में बदलाव हेतु ज्ञान, कौशल और व्यवहार शामिल हैं। एफ.एल.एन. के संदर्भ में, शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ताओं को 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों की सीखने की क्षमताओं के निर्माण हेतु एक जीवंत पाठ्यक्रम तैयार करने की आवश्यकता है। शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं, शिक्षकों को प्रशिक्षण एवं परामर्श देने, शिक्षकों और अभिभावक/समुदाय के साथ एक भरोसेमंद संबंध विकसित करने और सबसे महत्वपूर्ण, बच्चों के साथ सुदृढ़ भावनात्मक संबंध बनाने हेतु अनुकूल परिस्थितियों के निर्माण पर काम करते हैं। अपने सभी कार्यों और विद्यालयी प्रक्रियाओं में, शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता "बच्चे का केंद्र में होना" सुनिश्चित करते हैं और ये प्रक्रियाएँ बच्चों के सीखने के विकास-पथ के इर्द-गिर्द निर्मित की जाती हैं।

विज़न एवं पाठ्यचर्या लक्ष्यों को परिभाषित करना- एफ.एल.एन. के वांछित सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए, नेतृत्वकर्ताओं को अपने विद्यालयों के लिए एक विज़न एवं पाठ्यचर्या लक्ष्यों को निर्धारित करने की आवश्यकता होती है। विज़न एवं पाठ्यचर्या लक्ष्यों को 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य एवं बाल-कल्याण- यह एफ.एल.एन. का पहला विकासात्मक लक्ष्य है। एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता की पहली और सबसे महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी बच्चों के स्वास्थ्य और कल्याण को सुनिश्चित करना है। नेतृत्व समूह को बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण पर ध्यान देने के साथ ही साथ उनके सामाजिक-भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास को सुगम बनाने की भी ज़रूरत है।

साक्षरता और संख्या ज्ञान संबंधी दक्षताओं का निर्माण- यह क्षेत्र एफ.एल.एन. हेतु दूसरे और तीसरे विकासात्मक लक्ष्यों को शामिल करता है— प्रभावी सम्प्रेषक के रूप में विकसित होने वाले बच्चे और काम में संलग्न विद्यार्थी, जो अपने तात्कालिक परिवेश से जुड़ने में सक्षम हैं। एफ.एल.एन. पर पाठ्यक्रम ने उन दक्षताओं की एक रूपरेखा तैयार की है, जो 3-9 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के लिए प्राप्त करना अपेक्षित है। इन्हें आगे सीखने के प्रतिफलों में संहिताबद्ध किया गया है। एफ.एल.एन. की शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं के 6 वर्षों के अनुभव के अनुरूप सीखने के प्रतिफलों के 6 स्तर हैं। शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ताओं और शिक्षकों को विद्यालयों में सीखने की संस्कृति का निर्माण करने की ज़रूरत है, जहाँ बच्चे भाषा और स्थानिक-समझ संबंधी कौशलों के माध्यम से अपनी समस्याओं को हल करने के लिए आत्मनिर्भर हों। विद्यार्थियों के बीच रचनात्मक सोच विकसित करने हेतु नेतृत्वकर्ताओं को एक उत्साह जनक और आनंदमय माहौल उपलब्ध कराने की ज़रूरत है, जहाँ उन्हें निर्देशित प्रयोगों में संलग्न होकर अपने आसपास की दुनिया के अन्वेषण की स्वीकृति दी जाती है।

एफ.एल.एन. को सक्षम करने हेतु स्थितियाँ- सीखने का माहौल निर्मित करने हेतु नेतृत्व महत्वपूर्ण है, जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी की उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक पहुँच हो। इस लिहाज से यह कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है कि नेतृत्वकर्ता लगातार अपने विद्यालयों में साक्षरता और संख्या ज्ञान में होने वाले सुधारों के नेतृत्व, समर्थन और निगरानी में संलग्न रहे।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सक्षम बनाना- शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ताओं को एक प्रिंट-समृद्ध, खेल और गतिविधि आधारित शिक्षाशास्त्र द्वारा समावेशी और सक्षम कक्षा वातावरण को सुनिश्चित करना चाहिए। इसे बच्चों की दैनिक जीवन स्थितियों और बच्चों की स्थानीय भाषाओं के साथ औपचारिक रूप से जोड़ा जाना चाहिए।

शिक्षकों का क्षमता निर्माण- सभी बच्चों के लिए एफ.एल.एन. के उद्देश्य को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम शिक्षकों को एफ.एल.एन. के लिए व्यावसायिक रूप से सीखने के अवसर प्रदान करके व्यापक क्षमता निर्माण करना है। शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ताओं को शिक्षकों को स्व-निर्देशित क्षमता विकास में सक्षम बनाना चाहिए ताकि उन्हें बच्चों की आयु के अनुरूप उनके सीखने के विकास-पथ के साथ शिक्षाशास्त्र को संरेखित करने के लिए अधिक स्वायत्तता प्रदान की जा सके।

विद्यार्थी आकलन - प्रारंभिक स्तर पर विद्यालय आधारित आकलन (स्कूल बेस्ड अस्सेमेंट) मात्रात्मक परीक्षण द्वारा नहीं, बल्कि व्यापक रूप से बड़ी संख्या में अनुभवों और गतिविधियों में बच्चे के प्रदर्शन के आधार पर गुणात्मक अवलोकन के माध्यम से एवं तनाव-मुक्त होना चाहिए। सभी विद्यार्थियों के सीखने के स्तरों की निगरानी सुनिश्चित करने और बच्चे की ताकत, ज़रूरत, रुचियों और वरीयताओं की पहचान करने के लिए आकलन आवश्यक है।

हितधारकों के साथ साझेदारी- विद्यार्थियों में आजीवन सीखने की एक सुदृढ़ नींव के निर्माण के लिए, विद्यालयों का अपने सभी हितधारकों अर्थात शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यार्थियों, समुदाय सदस्यों, व्यवस्था स्तरीय कार्यकर्ताओं आदि के साथ सक्रिय रूप से जुड़ना अनिवार्य है।

हितधारकों, व्यवस्था स्तरीय कार्यकर्ताओं और आई.सी.डी.एस. के साथ साझेदारी- बच्चों के बीच बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) को हासिल करने और उसे सुदृढ़ करने के लिए कई मोर्चों पर प्रयास करने की आवश्यकता है। चूंकि, बच्चे अपनी माताओं और परिवारों के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े होते हैं, इसलिए शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ताओं और शिक्षकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे इस संबंध का लाभ उठाएँ और परिवार के वयस्कों को एफ.एल.एन. को सुदृढ़ करने में योगदान देने के लिए उन्मुख करें। एफ.एल.एन. को सुदृढ़ बनाने के लिए शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता अभिभावकों और समुदायों के साथ सुदृढ़ बंधन बना सकते हैं। इसके अलावा, शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ताओं को एफ.एल.एन. हेतु एक साझी सहयोगपरक विज़न के निर्माण हेतु व्यवस्था व्यवस्था

स्तरीय कार्यकर्ताओं, सी.डी.पी.ओ. और आँगनवाड़ी के साथ एक नेटवर्क बनाने और यह देखने की ज़रूरत है कि इसका क्रियान्वयन चरणबद्ध तरीके से हो।

विद्यार्थियों के सीखने के प्रतिफलों में सुधार- सीखने के वांछित प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए, शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ताओं के पास विद्यालय-व्यापी अधिगम में सुधार हेतु प्रक्रियाओं के ज्ञान के साथ-साथ सीखने-सिखाने का व्यावहारिक ज्ञान होना चाहिए। एफ.एल.एन. के सीखने के प्रतिफलों को शारीरिक और मानसिक विकास, सामाजिक-भावनात्मक विकास, साक्षरता और संख्या ज्ञान के विकास, संज्ञानात्मक विकास, जीवन कौशल आदि, जैसे विकास के विभिन्न क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करके बच्चे के समग्र विकास के माध्यम से पूरा किया जा सकता है।

गतिविधि 4 : अपने विचार साझा करें (Text - Blog) (10_13_hin_activity4_share_your_thoughts)

गतिविधि 4 : अपने विचार साझा करें

आप 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों की सीखने की क्षमता की उपलब्धियों को कैसे सुनिश्चित करेंगे? अपने विचारों को साझा करें।
शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कैसा हो? (Video) (10_14_hin_how_to_become_a_pedagogical_leader)
शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कैसा हो? – लिप्यंकन (Text)
(10_15_hin_how_to_become_a_pedagogical_leader_transcript)

शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कैसा हो? - लिप्यंकन

सूत्रधार - दृश्य 1 में नेतृत्वकर्ता 3 से 4 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए उपयोगी विभिन्न शिक्षण पद्धतियों पर चर्चा करने हेतु आंगनवाड़ी और प्राथमिक शिक्षकों को एक ही मंच पर लायीं हैं। एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता के रूप में, नेतृत्वकर्ता अच्छी तरह से जानती हैं कि प्राथमिक कक्षाओं में सुचारू रूप से शिक्षण ग्रहण के लिए पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में बुनियादी कौशलों का निर्माण करना महत्वपूर्ण है। अतः वह अपने विद्यालय में कक्षा 2 की एक शिक्षका के साथ आंगनवाड़ी शिक्षकों द्वारा प्रयोग में लाई जा सकने वाली शिक्षण पद्धतियों पर चर्चा कर रही हैं। विद्यालय के नेतृत्वकर्ता की भूमिका डॉ. पूजा सिंघल द्वारा निभाई जा रही है, सुश्री मोनिका बजाज आंगनवाड़ी शिक्षिका हैं और सुश्री अलका नेगी प्राथमिक विद्यालय में कक्षा 2 की शिक्षिका हैं।

दृश्य 1

प्रधानाचार्या - आइए हम उन शिक्षण पद्धतियों के बारे में चर्चा करें जिसे आप आंगनवाड़ी में 3 से 4 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों में संख्या अवधारणा (नंबर कॉन्सेप्ट्स) को सुदृढ़ करने के लिए प्रयोग में लाती हैं। मोनिका जी, क्या आप इस बारे में कुछ बताना चाहेंगी?

आंगनवाड़ी शिक्षिका (मोनिका) - जी मैडम, मैं संख्या अवधारणा (नंबर कॉन्सेप्ट) को उंगलियों की मदद से (उंगलियों को दिखाते हुए) कराती हूँ जैसे 1,2,3 और बच्चों को संख्या याद करवाने के लिए उन्हें बार-बार दोहराती हूँ। धीरे-धीरे, वे इन्हें पहचानना और लिखना सीख जाते हैं।

प्रधानाचार्या - ठीक है मोनिका जी, क्या आपको नहीं लगता कि संख्या की अवधारणा को केवल उंगलियों से प्रदर्शित करना **पारंपरिक शिक्षक केंद्रित तरीका है।** क्या हम छोटे बच्चों के लिए कोई **आकर्षक और आनंददायक पद्धति** का उपयोग कर सकते हैं?

अलका जी, कृपया संख्या अवधारणा (नंबर कॉन्सेप्ट) को अभिव्यक्त करने की अपनी तकनीक हमारे साथ साझा करें।

अलका जी- हाँ मैडम, मुझे अक्सर ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ता है, मैं आमतौर पर नंबर ट्रेन पर कूदने जैसी पद्धतियों का उपयोग करती हूँ। मैं 1 से 10 तक की संख्या अंकित किए हुए कागज़ों के दस टुकड़े लेती हूँ, उन्हें टेप की मदद से फर्श पर चिपका देती हूँ और रंगीन टेप का उपयोग करके उन्हें जोड़ देती हूँ फिर मैं विद्यार्थियों से एक विशिष्ट संख्या पर कूदने के लिए कहती हूँ। मैं खेल-खेल में सीखने की अवधारणा पर विश्वास करती हूँ। इस प्रक्रिया में मैं भी एक बच्चे जैसा महसूस करती हूँ।

दूसरा तरीका यह है कि जिन चीज़ो से वे अवगत हैं, उनसे संबंधित प्रश्न पूछना। हमारे पास कितनी आंखें हैं? उस संख्या को पहचानें। तुम्हारे पास कितने हाथ हैं...? उस नंबर का चयन करें...। और इसी प्रकार।

प्रधानाचार्या – बहुत अच्छे अलका जी, यह बहुत दिलचस्प लगता है, बुनयादी संख्यात्मक कौशल का प्रयोग करते हुए, 3 से 4 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के लिए, 'चौक और बात' पद्धति के बजाय, हमें एक मनोरंजक पद्धति का चयन करना चाहिए, जहाँ **'विद्यार्थी केंद्र में हो'।** यह आपके और बच्चों के बीच विश्वास निर्मित करने में मदद करता है। एक भय मुक्त वातावरण बनाता है और बच्चों को उनके वास्तविक जीवन से संबंधित अनुभवों के साथ अवधारणाओं को सीखने, तलाशने और जोड़ने में मदद करता है।

शिक्षिका (मोनिका) : हाँ मैडम, मैं इस चर्चा के दौरान शिक्षण की नई पद्धतियों को सीख रही हूँ।

प्रधानाचार्या : मोनिका जी, आपको प्रस्तुति के नए तरीकों (न्यू ट्रांजेक्शनल मेथड्स) को सीखने के लिए अलका जी के साथ नियमित संपर्क में रहना चाहिए और हम हर हफ्ते समीक्षा कर सकते हैं कि आंगनवाड़ी में बुनियादी संख्यात्मक ज्ञान किस प्रकार आगे बढ़ रहा है।

दृश्य 2

सूत्रधार - इस दृश्य में प्राथमिक विद्यालय की **नेतृत्वकर्ता** प्राथमिक विद्यालय के कक्षा 1 और कक्षा 2 में नामांकित बच्चों के अभिभावकों के साथ बातचीत कर रहीं हैं।

अभिभावक 1 (पूर्णिमा) से प्रधानाचार्या – पूर्णिमा जी, आप कैसी हैं? मैं आपसे पूछना चाहती हूँ कि क्या आपका बच्चा गणितीय गणनाओं को समझने में सक्षम है और घर पर आप इसमें और सुधार लाने में उसकी कैसे मदद करती हैं?

पूर्णिमा जी- हाँ मैडम... मेरी बेटी टीना ग्रेड 3 में है। वह गुणन की अवधारणा को समझ चुकी है और दैनिक जीवन में इसका उपयोग कर रही हैं। अलका मैम एक बहुत ही अच्छी शिक्षिका हैं। वह सभी बच्चों की बात सुनती हैं और गतिविधि-आधारित विनमय पद्धतियों (ट्रांजेक्शनल मेथड्स) का उपयोग करती हैं। एक बार मैं एक अभिभावक पर्यवेक्षक के रूप में कक्षा में गई थीं। घर पर भी मैं इन अवधारणाओं का तुकबंदी और खिलौनों के द्वारा मनोरंजक तरीके से पुनःअभ्यास करवाती हूँ। वास्तव में, मैं टीना से एक कहानी पर आधारित गणनाओं पर भी प्रश्न पूछती हूँ जिसमें एक छोटी लड़की एक सुंदर बगीचे में वस्तुओं के साथ खेल रही है। इन सबके लिए पिछली अभिभावक शिक्षक बैठक (पैरेंट टीचर मीटिंग) में मुझे अलका मैम ने गाइड किया था।

पूर्णिमा जी से प्रधानाचार्या - बहुत अच्छे पूर्णिमा जी, आप अपने बच्चे की शिक्षा का आकलन करने के लिए खिलौना आधारित शिक्षण पद्धति और कहानी कहने की पद्धति का उपयोग करती हैं। इसने उसकी संख्या अवधारणाओं को वास्तव में सुदृढ़ किया होगा। आपको उसकी कक्षा शिक्षका के साथ नियमित रूप से संपर्क में रहना चाहिए। मैंने यह भी सुना है कि अलका जी ने कई ऐसी शिक्षण पद्धतियों को साझा किया था, जिनका उपयोग अभिभावक घर पर कर सकते हैं ताकि बुनयादी संख्यात्मक ज्ञान को सुदृढ़ किया जा सके।

सतीश से प्रधानाचार्या : सतीश जी कैसे हैं आप? आपका बेटा गर्वित कैसा है?

सतीश से प्रिंसिपल- मैडम जी, मेरा बेटा हर समय खेलता रहता है.... वह मेरी बात नहीं सुनता .. कृपया मेरा मार्गदर्शन करें कि मुझे क्या करना चाहिए ... मैं घर पर उसको शिक्षित करने में कैसे मदद कर सकता हूँ ... मैं शिक्षित नहीं हूँ!

सतीश से प्रधानाचार्या- धैर्य रखिये सतीश जी... मैं जानती हूँ कि गर्वित आपका एक बहुत ही खुश मिजाज़ बेटा है? मैं उसके साथ कई बार खेली हूँ। वह अच्छा कर रहा है! चूंकि वह कक्षा 1 में है, आप विद्यालय में सीखी गई अवधारणाओं को सुदृढ़ करने के लिए हमारे गांव के प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं। आप कृषि से जुड़े हैं तो क्यों न आप उसके जोड़ और घटाव के अध्ययन का आकलन करने के लिए पत्तियों, पेड़ों की शाखाओं, आमों, सब्जियों या फूलों जैसे संसाधनों का उपयोग करें। इस तरह, वह प्रकृति के साथ भी जुड़ेगा और साथ ही विद्यालय में उसने जो कुछ भी सीखा है, उसको दोहराएगा भी। मैं सुमन जी, जो कक्षा 1 की शिक्षिका हैं, से अभिभावकों के साथ और भी तकनीकों को साझा करने के लिए कहूँगी।

प्रधानाचार्या से सतीश जी - धन्यवाद महोदया, जब भी गर्वित मेरे खेत में आया करेगा, मैं इन तकनीकों का उपयोग अवश्य करूंगा!

सभी से प्रधानाचार्या - आपके बच्चों के सीखने का आकलन करने और विद्यालय में सीखी गई अवधारणाओं को दोहराने में उनकी मदद करने हेतु घर पर प्रयोग की जा सकने वाली शैक्षणिक तकनीकों पर चर्चा करने के लिए सभी अभिभावकों का धन्यवाद।
पूर्णिमा और सतीश : धन्यवाद मैम!

शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता छोटे बच्चों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को सुदृढ़ करने के लिए विभिन्न तरीकों को नियोजित करता है जैसे कि बाल-केंद्रित शिक्षाशास्त्र पर शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण एवं विशेष व्याख्यान, बच्चों की अधिगम प्रक्रिया में अभिभावकों को शामिल करना ताकि बच्चे अपनी आयु के अनुरूप अधिगम क्षमता हासिल कर सकें एवं सीखने की प्रक्रिया में शामिल किये गये सहयोगात्मक रूप से निर्मित आकलन को पूरा कर सकें। एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता की भूमिका बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के सुदृढ़करण के साथ नव-जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण है।

एफ.एल.एन. के लिए विद्यालय- परिवार- समुदाय के बीच सफल भागीदारी का निर्माण

विद्यालय प्रमुखों द्वारा परिवार और समुदाय को कैसे संलग्न करें (Text) (10_16_hin_how to engage family and community by school heads)

विद्यालय प्रमुखों द्वारा परिवार और समुदाय को कैसे संलग्न करें

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का संबंध 6-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के कौशल विकास से है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि इतनी कम उम्र में बच्चा अपनी मां/अभिभावक, परिवार एवं घर के आसपास के सबसे करीब होता है। एक विद्यालय नेतृत्वकर्ता को बच्चों के सीखने के बुनियादी चरण में अभिभावक, परिवार एवं समुदाय की भूमिका को प्रोत्साहित और समझने की आवश्यकता है। विद्यालय को इन हितधारकों के साथ संबंधों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है ताकि बच्चा घर से विद्यालय और विद्यालय से घर जाने के बीच एक निरंतरता महसूस करें। ऐसे कई तरीके हैं जिनके माध्यम से विद्यालय नेतृत्वकर्ता एफ.एल.एन. के उद्देश्यों को प्राप्त करने में अभिभावक, परिवार और समुदाय के सदस्यों को शामिल कर सकते हैं। विद्यालय-अभिभावक-परिवार-समुदाय की भागीदारी को अधिक प्रभावी माना जाता है, जब ये बच्चे के विकासात्मक प्रक्षेप पथ को उनके सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक मापदंडों सहित प्रभावित करने में सक्षम होते हैं। आइए देखें कि इन हितधारकों को एक साथ कैसे लाया जाए और एफ.एल.एन. को सुदृढ़ करने में योगदान दिया जाए।

विद्यालय-परिवार-समुदाय की भागीदारी का मैट्रिक्स

नीचे दी गई तालिका में 6 प्रकार की विद्यालय-परिवार-समुदाय की भागीदारी का अवलोकन किया गया है जो बाल अधिगम के बुनियादी चरण को बेहतर बना सकता है। यह मॉडल एपस्टीन (2016) द्वारा प्रस्तावित किया गया है जिसका भारतीय संदर्भ में अनुकूलन किया गया है। विद्यालय नेतृत्व दल इन साझेदारियों को साकार करने के लिए विभिन्न रणनीतियों का उपयोग कर सकता है। यह माना जाता है कि इन रणनीतियों के माध्यम से विद्यालय एवं समुदाय को बच्चों में बुनियादी शिक्षा को सुदृढ़ करने में मदद मिलती है।

प्रकार	क्या	कैसे (गतिविधियाँ/अभ्यास)	बच्चों एवं अभिभावकों पर प्रभाव
पहला : पालन-पोषण	एक सुरक्षित और सीखने वाला घर का माहौल बनाने के लिए अभिभावक के साथ सहायता, समर्थन और संवाद करना	- आयु और स्तर के अनुरूप खेल और शिक्षण सामग्री तैयार करके - अभिभावक-परिवार हेतु कार्यशालाओं का आयोजन करके	- बच्चे घर और विद्यालय के बीच एक निरन्तरता महसूस करेंगे - बच्चे अपने विचारों, भावनाओं और सोच को घर और विद्यालय दोनों जगह भयमुक्त वातावरण में साझा कर सकेंगे
दूसरा : संचार	विद्यालय के कार्यक्रमों और बच्चों की प्रगति के बारे में विद्यालय से घर और घर से विद्यालय के बीच संचार का उचित चैनल बनाना	- शिक्षक प्रमुख,अभिभावक एवं पारिवर के बीच समानुभूतिपूर्ण वार्ता को प्रोत्साहित करके - यदि संभव हो, अभिभावकों के लिए व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर	- जागरूक अभिभावक बेहतर तरीके से अपने बच्चे की सहायता कर सकते हैं - शिक्षकों के साथ अभिभावकों की मुलाकात और विचारों के आदान-प्रदान

		- विद्यालय की समस्त नीतियों, कार्यक्रमों, ई.सी.सी.ई दिवस (आई.सी.डी.एस. स्कीम का पूर्व-बाल्यावस्था एवं देखभाल दिवस) और सम्मेलनों के बारे में जानकारियाँ साझा करके -बच्चे की डायरी में टिप्पणियाँ लिखकर - नियत समयावधियों में अभिभावकों से मिलने का समय तय करके	से अभिभावक को उन क्षेत्रों पर ध्यान देने हेतु मार्गदर्शन मिल सकता है, जहाँ बच्चे को मदद और मार्गदर्शन की आवश्यकता है। - अभिभावक अपने बच्चे को बड़े उत्साह के साथ विद्यालयी गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित होंगे
तीसरा : स्वयंसेवा	स्वयंसेवी अभिभावकों को विद्यालय से संबंधित कार्यों और गतिविधियों में शामिल करना	- अभिभावकों के लिए विद्यालय में एक अस्थाई स्थान बनाना ताकि वह वहाँ आकर बच्चों की अधिगम प्रक्रिया में सहयोग कर सकें - नेतृत्वकर्ताओं द्वारा अभिभावकों एवं समुदाय की प्रतिभाओं और कौशलों के बारे में जानकारी एकत्र करके - विद्यालय की समाचार-पत्रिका या कुछ कार्यक्रमों के आयोजन के माध्यम से स्वयं सेवकों के प्रति आभार जताकर	- बच्चों को वयस्कों के साथ बातचीत का अवसर मिलता है। - विभिन्न स्वयंसेवकों के साथ अंतःक्रिया से उन्हें नृत्य, नाटक जैसे विभिन्न प्रकार के कौशलों का अनुभव होता है। - अभिभावक और परिवार के सदस्य अपने बच्चों और विद्यालय के और समीप आएंगे
चौथा : घर पर सीखना	बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशल के साथ घर पर बच्चों की मदद करने के तरीकों के बारे में अभिभावकों एवं परिवारों का मार्गदर्शन करना	- अभिभावकों को विद्यालय संसाधन कक्ष का उपयोग करने के लिए आमंत्रित करके - अभिभावकों को विद्यार्थी आकलन के बारे में समझने में मदद करके - घर पर एक प्रिंट-समृद्ध वातावरण उपलब्ध करवा कर और उन गतिविधियों की सूची देकर, जो वे अपने बच्चों के साथ नियमित रूप से कर सकते हैं	- विभिन्न प्रयोगों के साथ घर पर अवधारणाओं को जोड़ना - प्रिंट-समृद्ध सामग्री बच्चे को नियमित रूप से अवधारणाओं को दोहराने में मदद करती है। - बच्चों का आत्मविश्वासी और स्वप्रेरित शिक्षार्थी बनना
पाँचवाँ : निर्णय लेना	अभिभावकों को नेतृत्वकर्ताओं के रूप में विकसित करके विद्यालय के निर्णयों, संचालन में भागीदार बनाना	- अभिभावकों को विद्यालय सुधार टीम की बैठकों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करके - सक्रिय अभिभावक शिक्षक बैठक (पी. टी. एम.) के लिए स्थान बनाकर	- बच्चे का विद्यालय और परिवार दोनों से बेहतर जुड़ाव - अभिभावक का विद्यालय की गतिविधियों के बारे में जागरूक होना

		- सभी परिवारों को अभिभावक प्रतिनिधियों से जोड़ने के लिए नेटवर्क विकसित करके	
छठवाँ : समुदाय के साथ सहयोग	विद्यालय के कार्यक्रमों, पारिवारिक प्रथाओं और बच्चों के सीखने का समर्थन करने के लिए समुदाय से संसाधनों और सेवाओं का समन्वयन करना	- स्वयंसेवा, परामर्श और विभिन्न प्रासंगिक विषयों पर बच्चों को अधिक जानकारी प्रदान करने के लिए स्थानीय सेवा समूहों को जोड़ने की कोशिश करके - नेतृत्वकर्ता और स्थानीय निकाय द्वारा मिलकर नियमित रूप से एफ.एल.एन. से संबद्ध समुदाय स्तरीय गतिविधियाँ जैसे- विद्याप्रवेश या बाल-उत्सव आदि का आयोजन करके, जहाँ अभिभावक भी अपने बच्चों के साथ शामिल हो सकते हैं	- सामुदायिक परामर्शदाताओं, स्वयंसेवकों, गैर-सरकारी संगठनों और अन्य व्यक्तियों से बच्चे विभिन्न कौशलों को सीखने में सक्षम बच्चे मेलों और समुदाय में आयोजित कार्यक्रमों में अपने पढ़ने, चित्रकारी करने, संवाद की प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकते हैं, जो उन क्रियाकलापों में उनका आत्मविश्वास पैदा करेगा

गतिविधि 5 : स्वयं करें (Text) (10_17_hin_activity 5_try_yourself)

गतिविधि 5 : स्वयं करें

एक नेतृत्वकर्ता के रूप में, वर्णन करें कि क्या आपके विद्यालय में सामुदायिक सहयोग सफलतापूर्वक संचालित और व्यवहृत किया जाता है तथा विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए इस सहयोग की चुनौतियाँ और लाभ क्या हैं?

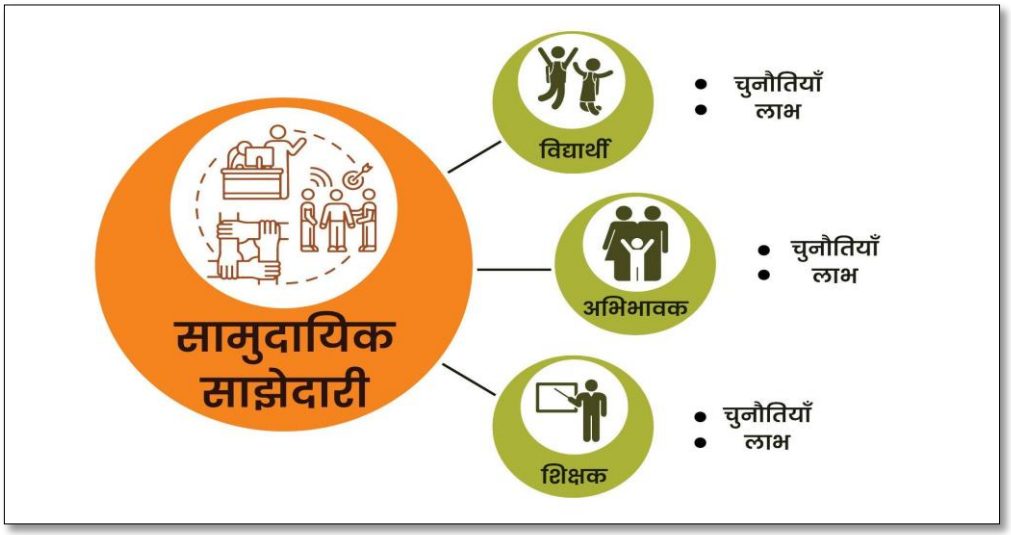

इसके बाद, निम्न तालिका को भरें। 6 प्रकार की साझेदारी में से प्रत्येक के तहत, आप और आपका विद्यालयी समूह 3-9 वर्ष की आयु के बच्चों के बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को बढ़ाने के लिए अभिभावक-परिवार-समुदाय के साथ कैसे सहयोग करेगा? अपने विद्यालय के अनुसार रणनीतियाँ लिखिए।

प्रकार	सुदृढ़ साझेदारी को बढ़ावा देने की रणनीतियाँ
प्रकार-1- पालन-पोषण	
प्रकार-2- संचार	
प्रकार-3- घर पर सीखना	
प्रकार-4- स्वयं सेवा	
प्रकार-5- निर्णय लेना	
प्रकार-6- समुदाय के साथ सहयोग	

विद्यालय में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) की योजना एवं क्रियान्वयन

ब्लॉक एवं विद्यालय स्तर पर बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ. एल. एन.) की अवधारणा (Text)
(10_18_hin_ conceptualizing_FLN_block_school_level)

ब्लॉक एवं विद्यालय स्तर पर बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ. एल. एन.) की अवधारणा

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कार्यक्रम के तहत पहली बार 3-9 वर्ष के आयु वर्ग को एक साथ में एकीकृत किया गया है। 2021 से पहले, 3-6 वर्ष की आयु वर्ग की प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं देखभाल भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की एकीकृत बाल विकास योजना के एकमात्र दायरे में आती थी। हालांकि, आई.सी.डी.एस. योजना अभी भी चालू है। शिक्षा के मूलभूत चरण को और गति देने के लिए, शिक्षा मंत्रालय ने 'निपुण मिशन' के तहत 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों को अपने दायरे में लाया है, जो पहले तीन वर्षों के पूरक हैं जो कि आई.सी.डी.एस. योजना का भी हिस्सा हैं। इस संदर्भ में, यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि एफ.एल.एन. की योजना बनाना और उसे लागू करना आई.सी.डी.एस. योजना के व्यवस्था स्तरीय कार्यकर्ता जैसे-बाल विकास परियोजना अधिकारी एवं आंगनवाड़ी के साथ-साथ व्यवस्था स्तरीय कार्यकर्ताओं जैसे- खंड शिक्षा अधिकारी, खंड संसाधन समन्वयक, क्लस्टर संसाधन समन्वयक, विद्यालय प्रमुख और शिक्षक की संयुक्त जिम्मेदारी बन जाता है। बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की परिकल्पना के अनुसार है कि आई.सी.डी.एस. एवं शैक्षिक के प्रयासों के बीच अभिसरण (कन्वर्जन्स)की आवश्यकता है जिसमें जिला/खंड शिक्षा अधिकारी, विद्यालय प्रमुख एवं शिक्षक शामिल हैं। 'भौतिक' अभिसरण लाने के प्रयास जारी हैं जिससे प्राथमिक विद्यालय परिसरों में शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रदान की गई निधि के माध्यम से आंगनवाड़ी या पूर्व-विद्यालय केंद्रों को स्थानांतरित किया जा रहा है। हालांकि, जहाँ भी यह संभव नहीं है, वहाँ इस प्राथमिक विद्यालय को आंगनवाड़ियों के साथ मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसके अलावा, यह भी परिकल्पना की जाती है कि सभी तरह 'कार्यक्रम संबंधी' अभिसरण को भी संभव बनाया जाए। उदाहरण के लिए, आई.सी.डी.एस. महीने में एक बार ई.सी.सी.ई. दिवस मनाता है। प्राथमिक विद्यालय प्रमुख और शिक्षक भी ई.सी.सी.ई. दिवस का हिस्सा बन सकते हैं, एक साथ योजना बना सकते हैं और इसे एक संयुक्त समारोह के रूप में संचालित कर सकते हैं। इसी तरह, यदि प्राथमिक विद्यालय प्रमुख कक्षा I, II और III के लिए अभिभावक-शिक्षक बैठक आयोजित करता है, तो आंगनवाड़ी में नामांकित बच्चों के अभिभावक को भी आमंत्रित किया जा सकता है, ताकि वे ग्रेड I की आवश्यकताओं के लिए उन्मुख हो सके।

उपरोक्त संदर्भ में, बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की योजना और क्रियान्वयन को दो स्तरों पर देखा जा सकता है, एक खंड स्तर पर और दूसरा विद्यालय प्रमुख के स्तर पर। अगले दो संसाधन निम्नलिखित से संबंधित हैं :

1. विद्यालय प्रमुखों द्वारा बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का क्रियान्वयन एक उदाहरण स्वरूप प्रस्तुतीकरण है जो दिखाता है कि कैसे विद्यालय प्रमुख का एक समूह खंड शिक्षा अधिकारी और बाल विकास परियोजना अधिकारी के साथ बातचीत करता है ताकि उन रणनीतियों पर चर्चा की जा सके जिन्हें अपने विद्यालयों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए नियोजित किया जा सकता है।
2. संदर्भ-विशिष्ट विद्यालय विकास योजना एक H5P गतिविधि है जो इस बात की रूपरेखा प्रदान करती है कि कैसे एक विद्यालय प्रमुख विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विद्यालय स्तर पर योजना एवं क्रियान्वयन की शुरूआत कर सकता है।

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का विद्यालय प्रमुखों द्वारा क्रियान्वयन (Video) (10_19_hin_implementation_of_fln_by_school_heads)

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का विद्यालय प्रमुखों द्वारा क्रियान्वयन – लिप्यंकन (Text) (10_20_hin_implementation_of_fln_by_school_heads_transcript)

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का विद्यालय प्रमुखों द्वारा क्रियान्वयन – लिप्यंकन

सूत्रधार- विद्यालय प्रमुखों एवं शिक्षकों का स्वागत है। यह प्रस्तुति उदाहरण स्वरूप दिखाई जा रही है कि कैसे ब्लॉक स्तर पर विद्यालय नेतृत्वकर्ता बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के क्रियान्वयन पर चर्चा करते हैं। यह प्राथमिक और संयुक विद्यालय के विद्यालय प्रमुख हैं जो एफ.एल.एन. की आवश्यकताओं एवं क्रियान्वयन रणनीतियों पर विचार विमर्श और सहयोग कर रहे हैं। इस चर्चा में ब्लॉक शिक्षा अधिकारी और बाल विकास परियोजना अधिकारी भी शामिल हैं। इस उदाहरण में भूमिकाएँ निभाई जा रही हैं ज्योति, अनुराधा और निधि विद्यालय प्रमुख की भूमिका निभा में हैं। डॉ. पूजा सिंघल बाल विकास परियोजना अधिकारी की भूमिका में हैं और डॉ. चारु मलिक ब्लॉक शिक्षा अधिकारी की भूमिका में हैं।

विद्यालय प्रमुख 1 (ज्योति)- नमस्कार! विद्यालय नेतृत्वकर्ताओं की ब्लॉक स्तरीय बैठक में आप सभी का स्वागत है। आज हमारे साथ प्राथमिक, प्रारंभिक एवं संयुक्त विद्यालयों के नेतृत्वकर्ता मौजूद हैं। हम अपनी बी.ई.ओ (ब्लॉक शिक्षा अधिकारी) मैडम एवं सी.डी.पी.ओ. मैडम का भी स्वागत करते हैं। साथियों जैसा आप सब जानते है बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन की शुरुआत 2021 की गई है। हम इस बारे में चर्चा अपनी संयुक्त बैठकों में भी कर चुके हैं। आप सभी की इस बारे में क्या राय है?

विद्यालय प्रमुख 2 (निधि) - हाँ, मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही बेहतरीन पहल है अकसर यह देखा गया है कि प्राथमिक कक्षा के बच्चों में बुनियादी ज्ञान की कमी होती है और मुझे आश्चर्य होता है कि क्या कोई ऐसा तरीका हो सकता है जिससे उनमें बुनियादी शिक्षा को सुदृढ़ किया जा सके। बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान बच्चों के बुनियादी शिक्षा के ग्रहण करने में अति मददगार साबित होगा।

विद्यालय प्रमुख 3 (अनुराधा) – सच में और अब 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के एफ.एल.एन. के दायरे में आ जाने से कम उम्र में ही उन्हें बुनियादी साक्षरता एवं शिक्षा का ज्ञान प्रदान किया जाएगा। खेल, गतिविधि आधारित और खिलौना आधारित शिक्षाशास्त्र के माध्यम से बच्चों के कौशल को अधिक मज़बूत किया जाएगा एवं विद्यार्थियों को सीखने में संलग्न विद्यार्थी के रूप में विकसित किया जाएगा।

विद्यालय प्रमुख 1 (ज्योति)- बी.ई.ओ. महोदया हमारी पूर्व-प्राथमिक इकाइयों एवं प्राथमिक विद्यालयों के बीच चल रहे अभिसरण यानि कनवर्जनस को आप किस प्रकार देखती है?

बी.ई.ओ. (चारु मलिक)- देखिए 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के बच्चों के लिए एफ.एल.एन. की शुरुआत की गई है उसमें तीन विकासात्मक लक्ष्यों को निर्धारित किया गया है। पहला है बच्चों का स्वास्थ्य एवं कल्याण सुनिश्चित करना, दूसरा बच्चों में प्रभावी संप्रेषण कौशल को विकसित करना और तीसराजैसा की आपने बोला बच्चों में सीखने की एक लगन को पैदा करना जिससे कि विद्यार्थी सीखने में संलग्न हो सके और लंबे समय तक सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से जुड़ सकें इससे एक बात और होगी कि वो अपने आसपास के वातावरण से जुड़कर अवधारणों को समझ पाएंगे। एफ.एल.एन. को पूर्व-प्राथमिक से प्राथमिक विद्यालयी शिक्षा के बीच एक निरन्तरता के रूप में भी देखा जा रहा है जिसका कि मायने यह है कि बच्चे अगर बुनियादी शिक्षा को अच्छी तरह से ग्रहण कर पाएंगे तो वह कक्षा तीन में अपेक्षित अधिगम प्रतिफलों को भी प्राप्त कर सकेंगे। इसी दिशा में एफ. एल. एन. को नियोजित किया गया है। एफ.एल.एन. में एक और अवधारण है जिसको समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है जो कि है 'रीड टू लर्न' और 'लर्न टू रीड'। इसका अर्थ यह है कि बच्चे अगर बुनियादी शिक्षा को अच्छी तरह से ग्रहण कर पाते हैं तो आगे की कक्षाओं में वह अपेक्षित अधिगम प्रतिफलों को प्राप्त कर पाएंगे और स्वनिर्देशित अधिगम की ओर बढ़ सकेंगे।

सी.डी.पी.ओ. (पूजा)- जी हाँ मैडम, बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान इतना महत्वपूर्ण है कि मैं विद्यालय नेतृत्वकर्ताओं से यह अनुरोध करती हूँ कि हमारे क्षेत्र में आकर हमारे शिक्षकगणों के साथ संवाद करे, साथ ही साथ, उनके कार्यकलापों का पर्यवेक्षण भी करें। मेरे पास आई.सी.डी.एस. के कुछ स्वनिर्देशित मॉडुल हैं जो मैं आप सभी के साथ साझा करूंगी जिससे कि आप छोटी आयु के बच्चों के विकासात्मक ज्ञान को समझ पाएंगे।

बी.ई.ओ. (चारु मलिक)- जी, सी.डी.पी.ओ. मैडम। आपका बहुत बहुत धन्यवाद। हम आपसे लगातार सीखते भी रहेंगे और आपसे चर्चा भी करेंगे। अब मैं अपने विद्यालय प्रमुखों से यह बात पूछना चाहूँगी कि एफ.एल.एन. के क्रियान्वयन में किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है?

विद्यालय प्रमुख 1 (ज्योति)- महोदया, मैं जिस तरह की चुनौती का सामना कर रही हूँ वह यह कि हमारे शिक्षक इस मिशन के प्रति जागरूक नहीं हैं। मैं उनके साथ काम कर रही हूँ ताकि वह न केवल उत्कृष्ट शिक्षक बन सकें बल्कि सुगमकर्ता भी बन सकें। पिछले कुछ वर्षों में मैंने अपने शिक्षकों का मार्गदर्शन किया। अब वह बाल-केंद्रित शिक्षाशास्त्रों को नियोजित कर रहें और अपनी कक्षाओं को पारस्परिक संवाद योग्य एवं आनंदमयी बना रहे हैं परंतु हमें इस बात की जानकारी नहीं है कि हम कम उम्र के बच्चों को खासकर कि 3-6 वर्ष के बच्चों को यह सुविधाएं किस प्रकार प्राप्त करवा सकते हैं। महोदया क्या हम अपने शिक्षकों के लिए किसी क्षमता-संवर्धन कार्यक्रम की व्यवस्था कर सकते हैं?

बी.ई.ओ. (चारु मलिक)- जी कर सकते हैं, बिल्कुल।

विद्यालय प्रमुख 2 (निधि) – हाँ, मैंने अपने विद्यालय परिसर में बच्चों के नामांकन की संख्या को बहुत कम देखा है। अभिभावक अपने बच्चों को सीधा कक्षा एक में भेजना पसंद करते हैं। उन्हें पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की महत्ता का ज्ञान नहीं है। हम सभी को अपने विद्यालय परिसर में अभिभावक सम्मेलन आयोजित करना चाहिए। अपने खेल के मैदान में हम पंचायती राज और अभिभावक को आमंत्रित कर सकते हैं। उन्हें एफ.एल.एन. की उपयोगिता का महत्व समझ सकते हैं तथा पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक कक्षाओं में 3-9 वर्ष के बच्चों के नामांकन के लिए जागरूक व प्रेरित कर सकते हैं।

विद्यालय प्रमुख 3 (अनुराधा) – यह बहुत ही अच्छा विचार है। एफ.एल.एन. के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अभिभावक, समुदाय पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालयों के सभी शिक्षकों का क्षमता-संवर्धन एक उचित रणनीति है। चूंकि मैं अपने ब्लॉक में एक विषय-विशेषज्ञ के रूप में कार्य कर रही हूँ। मैं एक जागरूकता कार्यक्रम तैयार कर सकती हूँ जिससे हमारे ब्लॉक के सभी विद्यालय 3-9 वर्ष की आयु के बच्चों के शिक्षण के बारे में जान सकें। हमें ऐसे संसाधनों की भी आवश्यकता होगी जिससे प्राथमिक विद्यालयों को प्रिन्ट-समृद्ध और खिलौना समृद्ध बनाने में सहायता मिल सकें।

बी.ई.ओ. (चारु मलिक)- वास्तव में सिर्फ़ शिक्षकों का ही नहीं बल्कि विद्यालय प्रमुखों का भी क्षमता संवर्धन कार्यक्रम करना अवश्य है। 'निष्ठा' एफ.एल.एन. में विद्यालय प्रमुखों को शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता के रूप में विकसित करना चाहते हैं। विद्यालय प्रमुख,विद्यालय के परिवर्तन में केंद्र बिन्दु पर हैं। वही बुनियादी शिक्षा, साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का नेतृत्व कर पाएंगे। 'निष्ठा' एफ.एल.एन. सही तरह से अनुसरण हो पाए इसके लिए आवश्यक होगा कि विद्यालय प्रमुखों के लिए क्षमता संवर्धन कार्यक्रम किया जाए।
सी.डी.पी.ओ. (पूजा)- जी मैडम, यह बहुत अच्छा रहेगा। मैं भी कार्यशाला में आ सकती हूँ।

सभी विद्यालय प्रमुख- जी हाँ

बी.ई.ओ. (चारु मलिक)- आइए हम सब मिलकर इस मिशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में एक दूसरे का सहयोग करें और यह सुनिश्चित करें कि 3-9 वर्ष की आयु का हर बच्चा बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की दक्षताओं को हासिल करने में सक्षम बन सके।

गतिविधि 6 : अन्वेषण (H5P - Image Hotspot) (10_21_hin_activity6_explore)

गतिविधि 6 : एक संदर्भ विशिष्ट विद्यालय विकास योजना तैयार करना- अन्वेषण

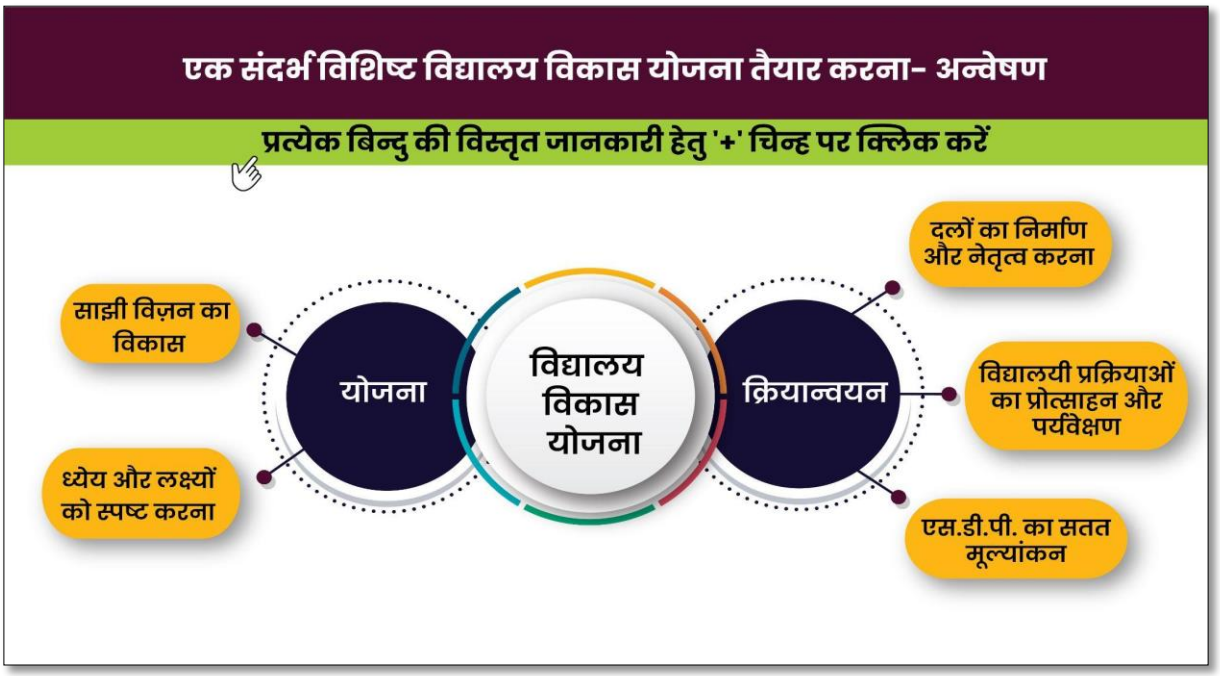

https://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1676

विद्यालय विकास योजना/स्कूल डेवलपमेंट प्लान (एस.डी.पी.)– यह नेतृत्वकर्ता द्वारा शिक्षकों, अभिभावकों, समुदाय और एस.एम.सी. सदस्यों के साथ विद्यालय के भीतर कार्यान्वित की जाने वाली गतिविधि है। यहाँ नेतृत्वकर्ता सहयोगात्मक रूप से भविष्य के लिए विद्यालय का एक विज़न निश्चित करता है और यह विवरण तैयार करता है कि इसे कैसे और कितने समय में प्राप्त किया जा सकता है। एस.डी.पी. का मूल विचार विद्यालय को अपने विकास और प्रमुख लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु दिशा प्रदान करना है।

योजना बनाना - योजना बनाने की प्रक्रिया में विद्यालय का संदर्भ, शिक्षकों एवं उनकी आवश्यकताओं को समझना ज़रूरी है। इसके अलावा, समुदाय (जनसांख्यिकी), विद्यालयी सुविधाओं, समुदाय और हितधारकों को समझना भी शामिल है, जो विद्यालयी योजना प्रक्रिया का हिस्सा होंगे। एफ.एल.एन. के संदर्भ में, नेतृत्वकर्ता को एक साझी विज़न का विकास करने, अपना ध्येय स्पष्ट करने और लक्ष्य निर्धारित करके योजना बनाने की आवश्यकता है।

साझी विज़न का विकास – यह विद्यालय को उसके विकास के लिए दिशा प्रदान करने का पहला कदम है। यद्यपि विज़न एक व्यापक क्षेत्र है जहाँ से विकास योजना शुरू होती है, वहीं विद्यालय स्तर पर योजना बनाने और उसके क्रियान्वयन को मार्गदर्शित करने के लिए एक बेहतरीन विद्यालय विकास योजना (एस.डी.पी.) कहीं अधिक गहन अभ्यास है। विज़न का विकास करते समय, एक नेतृत्वकर्ता को निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए —

- विज़न स्टेटमेंट में भविष्य की छवि झलकनी चाहिए
- विज़न मूल्य आधारित होना चाहिए, उदाहरण के लिए, आप इस मूल विश्वास को बनाए रखते हुए कि "प्रत्येक बच्चा सीख सकता है" विद्यार्थियों को विकसित कर सकते हैं
- साथ ही, विज़न को एक समय-सीमा में प्राप्त किए जा सकने की योग्य दिशा में होना चाहिए
- विज़न की एक निर्दिष्ट समय-सीमा होनी चाहिए, जो सामान्यतः 2 से 3 साल की होती है
-

ध्येय और लक्ष्यों को स्पष्ट करना- विद्यालय विकास योजना तैयार करने हेतु विज़न और एकत्रित किए गए मूलाधार आँकड़ों (बेसलाइन डेटा) का उपयोग आधार के रूप में किया जा सकता है। ध्येय एक सहयोगात्मक विज़न विकसित होने के बाद आते हैं। ध्येय हर साल तय किए जाते हैं। प्रत्येक ध्येय में हस्तक्षेप के विभिन्न क्षेत्रों के अनुरूप विशिष्ट लक्ष्य हो सकते हैं। लक्ष्य अल्पकालिक, कुछ दिनों, सप्ताहों या कुछ एक महीनों की औसत समय-सीमाओं के हो सकते हैं। रणनीतियाँ वे कार्य बिंदु हैं, जो लक्ष्यों को पूरा करने में मदद करते हैं।

क्रियान्वयन- योजना बनाने की प्रक्रिया पूरी हो जाने के बाद, नेतृत्व दल के लिए योजना को लागू करने का समय आता है। इसमें दलों का निर्माण और नेतृत्व करना तथा विद्यालयी प्रक्रियाओं का प्रोत्साहन और पर्यवेक्षण शामिल है।

दलों का निर्माण और नेतृत्व करना- विद्यालय विकास योजना की तैयारी और क्रियान्वयन हेतु जिम्मेदारियों को साझा करने के लिए दलों का गठन किया जाता है। यह गतिविधि शिक्षकों एवं अन्य दलों में काम करने और अपनी क्षमताओं व प्रतिभाओं का उपयोग करने में सक्षम बनाती है जिससे विद्यालय के प्रति उनका लगाव गहरा होता है। यह उन्हें विद्यालय और विद्यालयी विकास के करीब लाएगा। इन दलों में शिक्षक, समुदाय के प्रतिनिधि, विद्यालय प्रबंध समिति (एस.एम.सी.) सदस्य और अभिभावक शामिल हो सकते हैं।

विद्यालयी प्रक्रियाओं का प्रोत्साहन और पर्यवेक्षण- दलों को कार्य और ज़िम्मेदारियाँ आवंटित की जाती हैं, जिनका नेतृत्वकर्ता द्वारा नियमित रूप से प्रोत्साहन और पर्यवेक्षण करने की आवश्यकता है। दलों को निरंतर प्रोत्साहन और प्रेरणा की आवश्यकता होती है। एक नेतृत्वकर्ता की ज़िम्मेदारी यह देखना है कि दल सही रास्ते पर हैं या नहीं, दलों की आवश्यकता अनुसार संसाधन की पूर्ति तथा दलों द्वारा प्रतिफल प्राप्ति को सुनिश्चित करना।

एस.डी.पी. का सतत मूल्यांकन- एक बार एस.डी.पी. तैयार हो जाने के बाद, अब उसके क्रियान्वयन और नियमित निगरानी का समय है। निगरानी दल लक्षित ध्येय पर नज़र रखने में मदद करता है। आप अर्धवार्षिक या वार्षिक स्तर पर एस.डी.पी. की प्रगति का मूल्यांकन कर सकते हैं।

सारांश

सारांश (Mind Map) (10_22_hin_summary)
सारांश

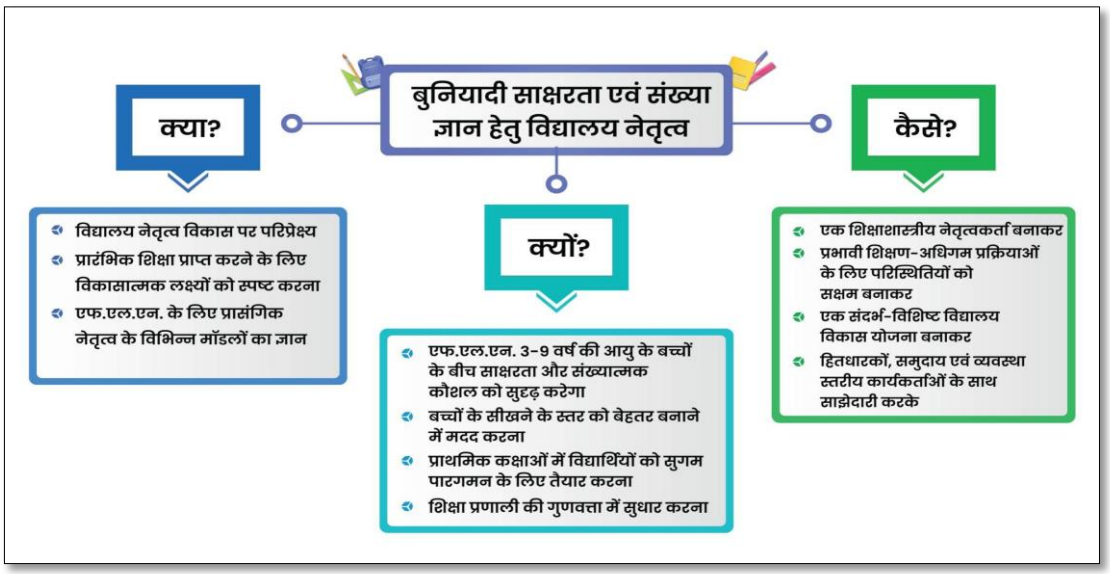

पोर्टफोलियो गतिबिधि

असाइनमेंट (Text) (10_23_hin_assignment)

असाइनमेंट

प्राथमिक विद्यालय के नेतृत्वकर्ता के लिए

इस कोर्स को पढ़ने के बाद, अन्य हितधारकों के साथ नेतृत्वकर्ता प्रत्येक घटक विषयवस्तु (थीम) के लिए स्पष्ट कार्य बिंदुओं को समाहित करते हुए एफ.एल.एन. हेतु अपनी योजना के क्रियान्वयन के लिए एक रूपरेखा तैयार करें। स्पष्ट रूप से परिभाषित करें कि एक नेतृत्व दल (विद्यालय प्रमुख, शिक्षक, एफ.एल.एन. संबंधी चयनित अभिभावक) के रूप में आप इस शैक्षणिक वर्ष में ठोस परिणामों के रूप में क्या हासिल करना चाहते हैं। इसके लिए आप 'कोर्स रिसोर्स ऑन स्कूल डेवलपमेंट प्लान' की मदद ले सकते हैं।

प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक नेतृत्वकर्ता के लिए

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के बाद, एक शिक्षक नेतृत्वकर्ता के रूप में आप 3-9 वर्ष की आयु के बच्चों के बीच एफ.एल.एन. कौशल को सुदृढ़ करने की योजना कैसे बनाएंगे? इस नई पहल हेतु तैयार होने के लिए आपको कौन से नए ज्ञान, कौशल और व्यवहार को विकसित करने की आवश्यकता होगी? अपने व्यावसायिक विकास के लिए एक योजना का निर्माण करें जिसमें नए शिक्षाशास्त्र समाहित हों जिन्हें आप बच्चों में बुनियादी कौशल को विकसित करने के लिए नियोजित करेंगे।

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ (Text) (10_24_hin_references)

संदर्भ

- बूथ, ए. और डन, जे.एफ. (सं.). (1996). फैमिली-विद्यालय प्रमुख लिंक्स : हाऊ डू दे अफेक्ट एजुकेशनल आउटकम्स? मावाह, एन.जे. : लॉरेंस एर्लबॉम.
- एप्सटीन, जे.एल. (मई 1995). विद्यालय प्रमुख/फैमिली/कम्युनिटी पार्टनरशिप्स : केयरिंग फॉर द चिल्ड्रेन वी शेयर. फी डेल्टा कप्पन, 76(9), 701–712.
- गाइडलाइंस फॉर पैरेंट पार्टिसिपेशन इन होम-बेस्ड लर्निंग ड्यूरिंग विद्यालय प्रमुख क्लोज़र एंड बियॉन्ड, 2021, मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन.
- अवस्थी, के. (2017). एकेडमिक सुपरविज़न एंड फ़ीडबैक : रियलाइजिंग द पोटेंशियल ऑफ फ़ील्ड लेवल लीडरशिप. एन.सी.एस.एल. कोर्स, नीपा.
- एंड्रूज़, आर.एल. और सॉडेर, आर (1987). प्रिंसिपल लीडरशिप एंड स्टूडेंट अचीवमेंट. एजुकेशनल लीडरशिप, 44(6), 9-11.
- सिउला, जे.बी. (2003). द एथिक्स ऑफ लीडरशिप. बेलमॉन्ट, सी.ए. : थॉमसन वड्सवर्थ.
- हॉजकिंसन, सी. (1983). द फ़िलॉसफ़ी ऑफ लीडरशिप. ऑक्सफ़ोर्ड : बेसिल ब्लैकवेल.
- मिनिस्ट्री ऑफ वीमेन एंड चाइल्ड डेवलपमेंट (MWCD). नेशनल अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन पॉलिसी (NECCE), गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, 2013.
- रोनाल्ड एच. हेक और फिलिप हॉलिंगर, 2010, कॉलेबोरेटिव लीडरशिप इफ़ेक्ट ऑन स्कूल इम्प्रूवमेंट : इंटरग्रेटिड यूनिडायरेक्शनल एंड रेसिप्रोकल-इफेक्ट मॉडल्स, द एलीमेंट्री स्कूल जर्नल, वॉल्यूम.111, नं 2.
- टी. नेल्सन और विकी स्क्वॉयर, 2017, एड्रेसिंग कॉम्पलेक्स चेलेंजिस थ्रो एडैप्टिव लीडरशिप : अ प्रोमिसिंग अप्रोच टू कॉलोब्रेट प्रोब्लम सोल्विंग,जर्नल ऑफ़ लीडरशिप एजुकेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ़ सास्काचेवान
- मार्गरिट ई. विटाले एंड अदर, 2017, करेक्टराइज़ ऑफ़ कॉलेबोरेटिव लीडरशिप इन एलीमेंट्री स्कूल : अंडरस्टेंडिंग द परशेप्शंस ऑफ़ प्रिंसिपल एंड टीचर्स, एड.डी. ड्रेक्सेल यूनिवर्सिटी

वेब लिंक्स (Text) (10_25_hin_weblinks)

वेब लिंक्स

- निपुण भारत संबंधी दिशानिर्देश :
https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nipun_bharat_eng1.pdf
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन संबंधी दिशानिर्देश
https ://ncert.nic.in/pdf/announcement/CCE-Guidelines.pdf
- विद्यार्थी अधिगम संवर्धन संबंधी दिशानिर्देश
https://ncert.nic.in/pdf/announcement/Learning_%20Enhancement_Guidelines.pdf
- द्वितीय स्तर पर अधिगम प्रतिफल
https ://ncert.nic.in/pdf/notice/learning_outcomes.pdf
- शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व- अंतर्दृष्टि :
http ://www.progressiveschool.in/pedagogical-leadership-an-insight/
- प्रधानाचार्य का चिंतन :
http ://esheninger.blogspot.com/2021/07/pedagogical-leadership.html
- निपुण भारत :
https://static.pib.gov.in/WriteReadData/specificdocs/documents/2021/jul/doc20217531.pdf

आकलन

<u>प्रश्नोत्तरी</u> (10_26_hin_quiz)

प्रश्नोत्तरी

1. बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की अवधारणा ..... बच्चों पर लागू होती है।
   - **क. <u>3-9 वर्ष आयु वर्ग के</u>**
   - ख. 6-14 वर्ष आयु वर्ग के
   - ग. 3-10 वर्ष आयु वर्ग के
   - घ. 5-13 वर्ष आयु वर्ग के

2. बच्चों की तर्क करने और दैनिक जीवन में सरल संख्यात्मक अवधारणाओं को प्रयोग करने की क्षमता को ..... के भाग के रूप में माना जा सकता है।
   - क. प्रारंभिक साक्षरता
   - ख. **<u>प्रारंभिक संख्या ज्ञान</u>**
   - ग. प्रारंभिक श्रवण
   - घ. प्रारंभिक मापन

3. शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ताओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी विद्यालयी प्रक्रियाओं में .....
   - **क. <u>बच्चे केंद्र में रहें</u>**
   - ख. शिक्षक केंद्र में रहे
   - ग. विद्यालय केंद्र में रहे
   - घ. प्रधानाचार्य केंद्र में रहे

4. 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के साथ व्यवहार करते समय एक नेतृत्वकर्ता का सही रवैया क्या होना चाहिए?
   - क. कठोर व्यवहार
   - ख. सख़्त आचरण
   - **ग. <u>सकारात्मक और लचीली मानसिकता</u>**
   - घ. भेदभावपूर्ण रवैया

5. नेतृत्व के किस मॉडल में, बच्चों की सांस्कृतिक और भाषाई पृष्ठभूमि के आधार पर विद्यालयी प्रक्रियाओं को निर्मित करने की बात की जाती है —
   - क. अकादमिक नेतृत्व
   - ख. रणनीतिक नेतृत्व
   - ग. **<u>संदर्भ-विशिष्ट नेतृत्व</u>**
   - घ. नवाचारी नेतृत्व

6. हितधारकों के साथ सहयोगात्मक प्रक्रिया ..... प्रोत्साहित कर सकती हैं।
    क. बच्चों की पढ़ने की आदतों को
    ख. **विद्यार्थियों के सीखने के प्रतिफलों हेतु साझा जवाबदेही को**
    ग. शिक्षकों के बीच समय की पाबंदी को
    घ. विद्यार्थियों के बीच रचनात्मकता को

7. एक नेतृत्वकर्ता 3-6 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों को ..... के माध्यम से संलग्न कर सकता है।
    क. व्याख्यान विधि
    ख. **खेल आधारित शिक्षाशास्त्र**
    ग. प्रदर्शन विधि
    घ. वैज्ञानिक प्रयोगों

8. निम्नलिखित में से कौन एक अनुकूलक नेतृत्वकर्ता की विशेषता नहीं है?
    क. प्रभाव डालना
    ख. भरोसा पैदा करना
    ग. कठिन और बहुआयामी चुनौतियों का सामना करना
    घ. लोगों की नहीं सुनना

9. सहयोगात्मक नेतृत्व की विशेषताओं में से एक है —
    क. बच्चों का सामाजिक-भावनात्मक विकास
    ख. साक्षरता और संख्यात्मक विकास
    ग. हितधारकों के बीच परस्पर विश्वास और सम्मान का निर्माण
    घ. बच्चों का संज्ञानात्मक विकास

10. परिवर्तनकारी नेतृत्व के लिए इनमें से कौन-सा सही नहीं है?
    क. एक साझी विज़न का निर्माण
    ख. शिक्षकों का व्यावसायिक विकास
    ग. शिक्षकों को प्रेरित करना
    घ. वित्तीय प्रबंधन

11. विज़न के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सत्य नहीं है?
    क. विज़न स्टेटमेंट में भविष्य के प्रयोजनों की झलक मिलनी चाहिए
    ख. विज़न मूल्य संचालित होना चाहिए
    ग. विज़न को एक दिशा में होना चाहिए
    घ. भविष्य दृष्टि की कोई निर्दिष्ट समय-सीमा नहीं होती है

12. विद्यालय विकास योजना एक विद्यालय आधारित गतिविधि है, जिसे नेतृत्वकर्ता द्वारा ..... कार्यान्वित किया जाता है।
    क. स्वतंत्र रूप से
    ख. शिक्षकों के साथ सामूहिक रूप से
    ग. विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावक के साथ सहयोगात्मक रूप से
    घ. <u>विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावक, समुदाय एवं विद्यालय प्रबंध समिति (एस.एम.सी.) सदस्यों के साथ सहयोगात्मक रूप से</u>

13. इनमें से कौन सी अवधारणा विद्यालयों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (FLN) के नेतृत्व हेतु प्रासंगिक नहीं है?
    क. बच्चे प्रेरित विद्यार्थी बनते हैं
    ख. 3-9 वर्ष आयु वर्ग के लिए प्रासंगिक शिक्षाशास्त्र पर शिक्षकों की कोचिंग
    ग. सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण संसाधनों के प्रभावी उपयोग को सक्षम करना
    घ. <u>समुदाय और अभिभावक के साथ संवाद नहीं करना</u>

14. बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के संदर्भ में विद्यालय विकास योजना हेतु इनमें से क्या आवश्यक है?
    क. विद्यालय का तकनीकी उन्नयन
    ख. **<u>3-9 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों की विकास संबंधी आवश्यकताओं की योजना बनाना</u>**
    ग. प्रशासनिक कार्य
    घ. स्टाफ़ का व्यावसायिक विकास

15. शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व विशेषज्ञता का एक व्यापक क्षेत्र है जिसमें एक नेतृत्वकर्ता के पास ..... होने की आवश्यकता होती है
    क. <u>3-9 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए उपयोगी शिक्षाशास्त्रों का गहन ज्ञान</u>
    ख. प्राथमिक कक्षा के शिक्षण विषयों की समझ
    ग. 6-14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए लेन-देन परक शिक्षाशास्त्र का ज्ञान
    घ. प्रयोगात्मक मॉडल की समझ

16. कक्षा 3 बच्चों के लिए सीखने का एक महत्वपूर्ण चरण है, क्योंकि यह ..... बदलाव का प्रतीक है।
    क. 'पढ़ने के लिए सीखना' से 'सीखने के लिए पढ़ना' में
    ख. 'पढ़ने के लिए सीखना' से 'लिखने के लिए पढ़ना' में
    ग. 'लिखने के लिए सीखना' से 'सीखने के लिए पढ़ना' में
    घ. 'लिखने के लिए सीखना' से 'लिखने के लिए पढ़ना' में

17. इनमें से किसे एक "प्रवेश द्वार कौशल" के रूप में माना जा सकता है जो औपचारिक विद्यालयी शिक्षा प्रक्रियाओं में बच्चे के प्रवेश को चिह्नित करता है?
    क. प्रारंभिक गणितीय कौशल
    ख. **<u>प्रारंभिक साक्षरता और संख्या ज्ञान कौशल</u>**
    ग. प्रारंभिक पठन एवं लेखन कौशल
    घ. प्रारंभिक बोलने के कौशल

18. उस पद को चिह्नित करें, जिसे विद्यालय में बच्चे की प्रगति में सीखने के अंतराल (लर्निंग गेप) को लगातार बढ़ने के रूप में समझा जा सकता है —
    क. सीखने की क्षमता में कुल कमी
    ख. **सीखने की क्षमता में संचयी कमी**
    ग. पढ़ने की क्षमता में कुल कमी
    घ. लिखने की क्षमता में संचयी कमी

19. इनमें से कौन शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व के ढांचे का हिस्सा नहीं है?
    क. सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को सक्षम करना
    ख. विज़न एवं पाठ्यचर्या लक्ष्यों को परिभाषित करना
    ग. विज्ञान प्रयोगशालाओं में प्रयोगों का नेतृत्व करना
    घ. हितधारकों के साथ नेटवर्क बनाना

20. निम्नलिखित में से कौन-सा बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का विकासात्मक लक्ष्य नहीं है?
    क. बच्चों का स्वास्थ्य और कल्याण बनाए रखना
    ख. बच्चों का प्रभावी संचारक बनना
    ग. बच्चों का संबद्ध विद्यार्थी बनना और तात्कालिक माहौल से जुड़ना
    घ. बच्चों का प्रभावी पाठक बनना

21. प्रभावी विद्यालय-अभिभावक के जुड़ाव में विश्वास करने वाले नेतृत्वकर्ताओं के यह कहने की अधिक संभावना है कि —
    क. केवल कुछ अभिभावक ही अपने बच्चों का समर्थन कर सकते हैं
    ख. **सभी अभिभावक अपने बच्चों का समर्थन कर सकते हैं**
    ग. गरीब अभिभावक अपने बच्चों का समर्थन नहीं कर सकते
    घ. केवल अंग्रेजी बोलने वाले अभिभावक ही अपने बच्चों की मदद कर सकते हैं

22. एक नेतृत्वकर्ता को 3-9 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के आकलन का आयोजन करना चाहिए
    क. उनकी क्षमता, आवश्यकता और रुचियों का आकलन करने के लिए
    ख. उनकी ग्रेडिंग के लिए
    ग. रैंक के अनुसार उन्हें रोक रखने के लिए
    घ. उन्हें वर्गीकृत करने के लिए

23. एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता की भूमिका है —
    क. बच्चों को अनुशासित करना
    ख. **बच्चों के लिए विभिन्न शैक्षणिक अभ्यासों पर शिक्षकों को प्रशिक्षित करना**
    ग. ग्रेड देने के क्रम में बच्चों का आकलन करना
    घ. अभिभावक को गलत सूचना प्रदान करना

24. 3-9 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए इनमें से कौन-सा शिक्षाशास्त्र प्रासंगिक नहीं है?
    क. गतिविधि आधारित
    ख. खिलौना आधारित
    ग. खेलपरक
    घ. सुकरात संवाद

25. शिक्षकों को नयी जानकारी प्रस्तुत करनी चाहिए और इसे उन चीजों के साथ जोड़ना चाहिए, जिन्हें बच्चे:
    क. पहले से ही जानते हैं
    ख. नहीं जानते हैं
    ग. जानना नहीं चाहते हैं
    घ. सीखने के लिए प्रतिरोधी हैं

26. एक बच्चा अपने बाएँ हाथ से लिखता है और इस तरह काम करने में सहज है, उसे .... चाहिए —
    क. दाएँ हाथ से लिखने के लिए तैयार करना
    ख. हतोत्साहित करना
    ग. <u>उसकी पसंद को प्रोत्साहित करना</u>
    घ. चिकित्सा सहायता लेने के लिए भेजना

27. 3-9 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के सीखने के आकलन हेतु उपयुक्त रणनीतियों में से एक होगी —
    क. विविध गतिविधियां करते हुए बच्चों का अवलोकन करना
    ख. चित्रात्मक जानकारी एकत्र करना
    ग. बच्चों को निर्धारित दिनचर्या का पालन करने के लिए कहना
    घ. मासिक परीक्षण करना

28. विकास की दृष्टि से निम्नलिखित में से कौन-सा कक्षा अभ्यास कम आयु के बच्चों के लिए उपयुक्त होगा?
    क. दिनचर्या में नियमित अंतर प्रदान करना
    ख. प्रत्येक दिन की शुरुआत आधे घंटे के सामूहिक समय (सर्कल टाइम) के साथ करना
    ग. प्रत्येक दिन कठिन शब्दों से परिचय कराना
    घ. <u>धीरे-धीरे नयी अवधारणाओं का परिचय देना</u>

29. विद्यालय में प्रातःकाल आगमन समय को बनाये रखने के लिए पहली कक्षा के शिक्षक को कौन-सी रणनीति अपनानी चाहिए ?
    क. आगमन समय के आधार पर अंक पाने और खोने की प्रणाली
    ख. देर से आने वालों को विद्यालय प्रमुख के कार्यालय में भेजना
    ग. बच्चों को कुछ न कहना
    घ. बच्चों के लिए सामूहिक पठन जैसे नियमित आगमन कार्यों की शुरुआत करना, ताकि उन्हें समय पर आने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके

30. नेतृत्वकर्ता पूर्व-प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के साथ प्रभावी संबंध कैसे बना सकता है?
    क. <u>बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं के बारे में शिक्षकों के साथ चर्चा करके और योजना बनाकर</u>
    ख. विद्यालय खाते का विवरण साझा करके
    ग. शिक्षकों को एक सख्त दिनचर्या का पालन करने के लिए कहकर
    घ. शिक्षकों को 3-6 वर्ष की आयु के बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करके

31. बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के संदर्भ में वयस्क और बच्चे के बीच क्या संबंध होना चाहिए?
    क. भावनात्मक दूरी बनाए रखना
    ख. **भयमुक्त और आनंदपूर्ण**
    ग. शिक्षक-विद्यार्थी
    घ. अनुशासन परक

32. इनमें से कौन विद्यालय-परिवार-समुदाय के बीच एक प्रकार की भागीदारी नहीं है?
    क. संचार करना
    ख. पालन-पोषण करना
    ग. स्वयंसेवा (वालंटियर) करना
    घ. सहभागिता करना

33. निम्नलिखित में से कौन 'लर्निंग एट होम' (घर पर सीखना) की भागीदारी के प्रकार में शामिल नहीं है?
    क. शिक्षकों का अभिभावक के साथ चर्चा करना कि वे घर पर सीखने का माहौल कैसे बना सकते हैं
    ख. बच्चों की सीखने की ज़रूरतों, रुचियों और ताकतों के बारे में समझने में अभिभावक की मदद करना
    ग. **यदि अभिभावक निरक्षर हैं, तो उनके साथ भेदभाव करना**
    घ. अभिभावक के साथ उन गतिविधियों की एक सूची साझा करना, जो वे सीखने में सहायता के लिए घर पर कर सकते हैं

34. 'संचार' की भागीदारी के प्रकार में शामिल है —
    क. अभिभावक के साथ बच्चों के पोर्टफ़ोलियो पर नियमित रूप से चर्चा करना
    ख. अभिभावक से बात न करना
    ग. यह विश्वास करना कि अभिभावक बच्चों के सीखने को प्रोत्साहित नहीं कर सकते
    घ. अभिभावक को सूचित करना कि उनके बच्चे कार्य-प्रदर्शन में सक्षम नहीं हैं

35. शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व सकारात्मक रूप से प्रभाव डालता है —
    क. शिक्षक व्यवहार पर
    ख. **बच्चों की सीखने की क्षमता पर**
    ग. विद्यालय की चारदीवारी के निर्माण पर
    घ. नेतृत्वकर्ता के कल्याण पर

36. विद्यालय किस प्रकार विभिन्न परिवारों को बाल शिक्षा में शामिल नहीं कर सकते हैं?
    क. परिवारों के साथ जुड़ाव पर भरोसा करके
    ख. परिवारों की आवश्यकताओं को संबोधित करके
    ग. परिवारों के साथ जानकारी और ज़िम्मेदारी साझा करके
    घ. विद्यार्थियों को केवल गृहकार्य देकर

37. बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) को सुदृढ़ करने हेतु विद्यालय नेतृत्व के लिए कौन-सा मॉडल उपयुक्त नहीं है?
    क. अनुकूलक नेतृत्व
    ख. सहयोगात्मक नेतृत्व
    ग. परिवर्तनकारी नेतृत्व
    घ. <u>अकादमिक नेतृत्व</u>

38. एक नेतृत्वकर्ता का वह गुण, जो प्रारंभिक स्तर पर सीखने के लिए उपयुक्त नहीं है —
    क. लचीली मानसिकता
    ख. बच्चे को केंद्र में रखना
    ग. <u>सत्तावादी होना</u>
    घ. भरोसा पैदा करना

39. एक पाठ को सटीकता, गति, अभिव्यक्ति और समझ के साथ पढ़ने की क्षमता, जो बच्चों को पाठ से अर्थ निकालने के लिए सक्षम बनाना, _____ कहलाता है।
    क. मौखिक भाषा विकास
    ख. कूटवाचन (डिकोडिंग)
    ग. **<u>धाराप्रवाह पढ़ना</u>**
    घ. पढ़ने की समझ

40. विद्यालय नेतृत्व कर सकता है —
    क. विद्यालय प्रमुख के दिन-प्रतिदिन के प्रबंधन में मदद
    ख. शिक्षक प्रबंधन में सहायता
    ग. **<u>बच्चों के बीच सुदृढ़ प्रारंभिक अधिगम क्षमता का निर्माण</u>**
    घ. विद्यालय प्रमुख में अनुशासन लाना

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान
राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र
17-बी, श्री अरबिंदो मार्ग, नई दिल्ली-110016 (भारत)